उड़ान

वर्ष 2023-2024

अंक - 20

सेना उड़नयोग्यता और प्रमाणीकरण केन्द्र

बेंगलूरु - 560 037

सेमिलाक स्थापना दिवस के अवसर पर गृह-पत्रिका उड़ान का विमोचन करते हुए अध्यक्ष डी.आर.डी.ओ, महानिदेशक वैमानिकी, महानिदेशक डीजीएक्यूए, मुख्य प्रबंधन निदेशक एच.ए.एल, मुख्य कार्यपालक (उड़नयोग्यता), सेमिलाक

सेमिलाक में आयोजित **"अभिमुखीकरण कार्यक्रम - 2023"** का समूह चित्र

उड़ान

वर्ष 2023-2024

अंक - 20

सेना उड़नयोग्यता और प्रमाणीकरण केन्द्र
रक्षा मंत्रालय, मारतहल्ली कालोनी पोस्ट
बेंगलूरु - 560 037

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
Government of India

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि **सेना उड्डनयोग्यता और प्रमाणीकरण केन्द्र (सेमिलाक), बेंगलूरु** द्वारा अपनी हिन्दी गृह-पत्रिका **"उड़ान"** के बीसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हमारे देश में कई भाषाएं है परंतु जो भाषा हम सब को जोड़ती है वह है हमारी राजभाषा हिंदी। हिंदी ने देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी हमारे नागरिकों को संगठित किया है। हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के लिए हमें चाहिए कि हम हिंदी भाषा में अधिक-से-अधिक कार्य करें जिससे कि हम सभी देशवासी एवं प्रवासी भारतीय गौरवान्वित महसूस करें। इस गृह-पत्रिका के माध्यम से हिंदी में तकनीकी लेखों और ज्ञान-विज्ञान के अन्य विषयों को सरलता से प्रस्तुत किया जाता रहा है। हिंदी में मौलिक चिंतन और लेखन को इस पत्रिका ने बल दिया है। साथ ही केन्द्र में हो रहे अनुसंधान कार्यों को आम जनमानस तक पहुंचाने के लिए भी इस पत्रिका का योगदान प्रशंसनीय है।

मैं इस अवसर पर केन्द्र के निदेशक सहित पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके इस प्रयास के लिए बधाई देता हूं और पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 05 मार्च, 2024

समिर कामत
(डॉ. समिर वी. कामत)

रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग, डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली-110011
Ministry of Defence, Department of Defence R&D, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Phone : 011-23011519, 23014350 फैक्स/Fax : 011-23018216 ई-मेल/E-mail : secydrdo@gov.in

एम. जेड. सिद्दिक
M. Z. SIDDIQUE
विशिष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक - वैमानिकीय प्रणाली
Distinguished Scientist &
Director General - Aeronautical Systems

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research & Development Organisation
एडीई परिसर
ADE Campus
नू तिप्पसान्द्रा पोस्ट, बेंगलूर 560 075
New Thippasandra Post , Bangalore 560 075

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी है कि **सेना उड़नयोग्यता और प्रमाणीकरण केन्द्र (सेमिलाक), बेंगलूरु** द्वारा अपनी हिन्दी गृह-पत्रिका **"उड़ान"** के बीसवें अंक को प्रकाशित किया जा रहा है।

हिन्दी भाषा के प्रति समर्पण भाव ही राष्ट्र को सफलता की ऊंचाइयों तक ले जाएगा। हमारा देश एक बहुभाषी देश है और यहां हर भाषा को यथोचित सम्मान प्राप्त है। हिन्दी गृह-पत्रिकाएं सरकारी कामकाज में हिन्दी को गौरवशाली स्थान दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिन्दी भाषा के माध्यम से ही वैज्ञानिक, साहित्यिक, चिकित्सा और राजभाषा से संबंधित नवीनतम लेखों और जानकारियों को जन-साधारण तक पहुंचाया जा सकता है। मैं आशा करता हूं कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेख न केवल वैज्ञानिक और तकनीकी अपितु गैर-तकनीकी क्षेत्र में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए उपयोगी साबित होंगे।

मैं केन्द्र के निदेशक, संपादक मंडल एवं पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेखों के रचनाकारों को उनके रचनात्मक योगदान के लिए हार्दिक बधाई देते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 02 जनवरी, 2024

एम. जेड. सिद्दिक
(एम. जेड. सिद्दिक)

Bangalore Office Telephone : +91 080-22511402/22511430, Fax : 080-25263022/25263028
Delhi Office : 011-23014018, Fax : 011-23014794
e-mail : dgaero@nic.in

पुरुषोत्तम बेज
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक (आर. एण्ड एम.)
Purusottam Bej
Outstanding Scientist &
Director General (R & M)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
अनुसंधान तथा विकास संगठन
101, डी आर डी ओ भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली-110 011, भारत
Government of India
Ministry of Defence
Defence Research & Development Organisation
101, DRDO Bhawan, Rajaji Marg
New Delhi-110 011, India

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि **सेना उड्डनयोग्यता और प्रमाणीकरण केन्द्र (सेमिलाक), बैंगलूरु** अपनी हिन्दी गृह-पत्रिका **"उड्डान"** के बीसवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा नियमों तथा निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा को प्रदर्शित करता है।

राजभाषा हिंदी हमारे देश की एकता, अखंडता तथा अस्मिता को कायम रखने का सबसे सशक्त माध्यम है क्योंकि देश के सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली तथा समझी जाने वाली भाषा हिंदी ही है। अतः हिंदी में गृह-पत्रिका का प्रकाशन तथा उसके जरिए तकनीकी तथा साहित्यिक लेखों, निबंधों, कविताओं आदि को पाठक के समक्ष प्रस्तुत करना अत्यंत सराहनीय कार्य है। इससे अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने तथा अपने मौलिक चिन्तन को राजभाषा में अभिव्यक्त करने की प्रेरणा भी मिलेगी ।

मैं इस शुभ अवसर पर केन्द्र के निदेशक, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और पत्रिका के संपादक मंडल को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 3 जनवरी, 2024

(पुरुषोत्तम बेज)

दूरभाष/Phone : 011-23011860 फैक्स/Fax : 011-23015395
ई-मेल/E-mail : dgrm.hqr@gov.in

डॉ. रविन्द्र सिंह
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
एवं
निदेशक (डी पी ए आर ओ एंड एम)

Dr. Ravindra Singh
OUTSTANDING SCIENTIST
&
DIRECTOR (DPARO&M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अ.शा.प.सं./DO No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Parliamentary Affairs, Rajbhasha and Organisation & Methods (DPARO&M)
'ए' ब्लॉक, प्रथम तल
'A' Block, First Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Telephone: 23013248, 23007125
फैक्स/Fax: 23011133, 23013059

दिनांक/Dated : 03/01/2024

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि **सेना उड़नयोग्यता और प्रमाणीकरण केन्द्र (सेमिलाक), बेंगलूरु** अपनी वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका **"उड़ान"** के बीसवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों को संवैधानिक उत्तरदायित्वों के अनुपालन के साथ-साथ केन्द्र में संपन्न हो रहे अनुसंधान कार्यों एवं क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त होती है।

पत्रिकाओं के माध्यम से वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने कार्यालयीन व अन्य शोध कार्यों को हिन्दी माध्यम से प्रस्तुत करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त होता है तथा केन्द्र की गतिविधियों से अवगत होते हुए और अधिक उत्साह के साथ कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इस पत्रिका में रोचक विषयों के साथ-साथ उपयोगी व ज्ञानवर्धक विषयों का समावेश किया गया है जो पत्रिका को एक सार्थक रूप प्रदान करते हैं।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके योगदान के लिए बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि भविष्य में सभी कार्मिक इसी तत्परता, विश्वास और लगन से इस पत्रिका को कामयाब बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 03 जनवरी, 2024

(डॉ. रविन्द्र सिंह)

ए पी वी एस प्रसाद
APVS PRASAD
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
Outstanding Scientist
मुख्य कार्यपालक (उड़नयोग्यता)
Chief Executive (Airworthiness)

सत्यमेव जयते

अ.स.सं / D.O. No. CEMILAC/3500/CES/BD/4
भारत सरकार – रक्षा मंत्रालय
Government of India - Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
Defence Research & Development Organisation
सेना उड़नयोग्यता और प्रमाणीकरण केन्द्र (सेमिलाक)
Centre for Military Airworthiness
and Certification (CEMILAC)
मारतहल्ली कालोनी (पोस्ट)
Marathahalli Colony (Post)
बेंगलूरु / Bengaluru - 560 037
भारत / India

दिनांक / Date
16 फरवरी 2024

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि सेमिलाक की राजभाषा गृह पत्रिका के 20वें गैर-तकनीकी अंक का प्रकाशन यथा-समय किया जा रहा है। मेरा मानना है कि पत्रिका प्रकाशन से न केवल नई-नई प्रतिभाओं को अपनी रचनात्मकता सामने लाने का सुअवसर मिलता है बल्कि प्रकाशन से हिंदी का एक अनुकूल वातावरण भी सृजन होता है। यह पत्रिका प्रयोगशाला से जुड़ी राजभाषा हिंदी के उन्नयन के लिए आयोजित कार्यक्रमो जैसे हिंदी कार्यशाला, हिंदी पखवाड़ा, राजभाषा संगोष्ठी, राजभाषा से संबंधित क्रियाकलापों की जानकारी प्रदान करने वाले कार्यक्रम इत्यादि आयोजन को प्रतिबिंबित करती है। सेमिलाक के कार्मिक इन कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

भारत का संविधान हमें हिंदी में कार्य करने के लिए संकल्पित करता है जिसे ध्यान में रखते हुए सेमिलाक हिंदी के प्रयोग, प्रचार और प्रसार के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है। प्रत्येक भारतीय का यह दायित्व है कि संविधान की अपेक्षाओं के अनुरूप वह इस भाषा के उत्तरोत्तर विकास और संवर्धन में अपना उल्लेखनीय योगदान दे। तकनीकी एवं संचार साधनों के सहज एवं सुलभ प्रयोग से विभिन्न देशों के बीच की भौगोलिक दूरियां लगभग मिट-सी गई है और संपूर्ण विश्व एक गांव सा बन गया है जिससे यह आशा की जा सकती है कि बढ़ते वैश्वीकरण के कारण सब भाषाओं का वैश्वीकरण हो जाएगा जिसमें हिंदी भाषा भी एक होगी। मेरा मानना है कि हिंदी में "वसुधैव कुटुंबकम" के विचार के कारण अंतर्राष्ट्रीय जगत के दर्शन समाहित है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विविधता मे एकता दर्शाने वाली यह पत्रिका अपने बहुआयामी दायित्व में पूर्णरूप से सफल होगी।

मैं आशा करता हूं कि यह पत्रिका हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देगी। मैं पत्रिका के प्रकाशन में जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को उनके अथक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

ए पी वी एस प्रसाद
(ए पी वी एस प्रसाद)

कार्यालय दूरभाष / Office Telephone : +91 080 25230680, 25121000,
फैक्स / Fax : +91 080 25230856, ई-मेल / E-mail : chief@cemilac.drdo.in

संजीव कुमार झा
Sanjeev Kumar Jha
वैज्ञानिक 'जी'
Scientist 'G'
उपाध्यक्ष, राजभाषा
Dy Chairman, Rajbhasha

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय (आर एण्ड डी)
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF DEFENCE (R&D)
सैन्य उड़नयोग्यता और प्रमाणीकरण केंद्र
CENTRE FOR MILITARY AIRWORTHINESS AND CERTIFICATION
मारताहल्ली कालोनी (पोस्ट)
MARATHAHALLI COLNY (POST)
बेंगलुरु – 560 037, भारत
BENGALURU - 560 037, INDIA

संपादक की कलम से

सेमिलाक के सभी विभागों को फूलों की माला की तरह एकता के सूत्र में पिरोकर रखने वाली विभागीय पत्रिका "उड़ान" को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। श्रृंगार में जो स्थान बिंदी का है वहीं स्थान कार्यालय में राजभाषा हिंदी का है। सेमिलाक के अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा हिंदी में कार्य करके अपने आपको गौरवांवित महसूस करते हैं जिसके कारण सभी वर्ग के अधिकारियों का "उड़ान" से विशेष लगाव है। यह पत्रिका हिंदी में कार्य करने हेतु उनके 'हौसलों को उड़ान' देती है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि यह पत्रिका विभाग की आत्मा तथा गौरव है।

उड़नयोग्यता एवं प्रमाणीकरण कार्यों में अग्रणी रहने के संघर्ष के बावजूद हमने राजभाषा के प्रशासनिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में अधिकतम उपयोग के अपने उत्तरदायित्व का भी बखूबी निर्वाह किया है। राजभाषा की प्रगति एवं उत्थान के लिए हिंदी दिवस, पखवाड़ा समारोह, हिंदी कार्यशालाओं का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। "उड़ान" का यह अंक सामयिक लेख, कविताओं, कहानियों एवं यात्रा विवरण का सुंदर सामंजस्य है जो पाठकों के लिए अत्यंत रोचक एवं सूचनाप्रद है।

"उड़ान" पत्रिका का 20वां अंक अपनी आकर्षक एवं ज्ञान परक रचनाओं के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है कि यह सभी के हृदय में अपनी अमिट छाप छोड़ने में अवश्य कामयाब होगी और सबके लिए हिंदी से जुड़ने का प्रेरणास्रोत बनेगी।

मै पत्रिका के प्रकाशन एवं दैनिक कामकाज में हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित करने वाले सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देता हूँ।

(संजीव कुमार झा)

आदित्य कुमार मिश्र
Aditya Kumar Mishra
वैज्ञानिक एफ
Scientist.F
मुख्यस्थ, राजभाषा
Head, Rajbhasha

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय (आर एण्ड डी)
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF DEFENCE (R&D)
सेना उड्डनयोग्यता और प्रमाणीकरण केंद्र
CENTRE FOR MILITARY AIRWORTHINESS AND CERTIFICATION
मारत्तहल्ली कालोनी (पोस्ट)
MARATHAHALLI COLNY (POST)
बेंगलूरु – 560 037, भारत
BENGALURU- 560 037, INDIA

सह संपादक की कलम से

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि सेना उड्डनयोग्यता एवं प्रमाणीकरण केंद्र (सेमिलाक), बेंगलूरु गत वर्षों की भाँति वर्ष 2023-24 में गैर तकनीकी गृह-पत्रिका "उड़ान" के 20वें अंक का प्रकाशन कर रही है। हिंदी का अनुपालन करना हम सभी का सांवैधानिक दायित्व है और "उड़ान" पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

दुर्गम एवं जटिल वातावरण में अपने वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों को अंजाम देने के साथ-साथ यह प्रतिष्ठान राजभाषा-कार्यान्वयन के लिए सदैव प्रयासरत है। संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के सभी लक्ष्यों को हमने पूरा करने का प्रयास किया है। प्रतिष्ठान में कार्यरत वे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र है जिन्होंने "उड़ान" के प्रकाशन हेतु अपने साहित्यिक लेख एवं कविताएँ इत्यादि प्रस्तुत करके राजभाषा के प्रति अपने दायित्व का पूर्णरूपेण निर्वाहन किया है।

राजभाषा हिंदी के विकास में इस तरह का सार्थक प्रयास वास्तव में प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी मात्र एक भारतीय भाषा ही नहीं, बल्कि संपूर्ण देश की एकता एवं अखंडता की सूत्रधार है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय से आज तक हिंदी अपने इस दायित्व को पूरा करने हेतु निरंतर गतिशील है। मुझे खुशी है कि इस प्रतिष्ठान ने "उड़ान" के प्रकाशन के माध्यम से राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को एक नई दिशा देने की पहल की है, यह निस्संदेह प्रेरणास्पद है।

मैं इस पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इस प्रकार के उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक अंक नियमित रूप से प्रकाशित होते रहेंगे।

आदित्य कुमार मिश्र

(आदित्य कुमार मिश्र)

उड़ान

संरक्षक

श्री ए पी वी एस प्रसाद, उत्कृष्ट वैज्ञानिक
मुख्य कार्यपालक (उड़नयोग्यता)

संपादकीय मंडल

मुख्य संपादक

श्री संजीव कुमार झा, वै.जी एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा

सह संपादक

श्री आदित्य कुमार मिश्र, वै.एफ एवं मुख्यस्थ, राजभाषा

संपादक समिति

श्रीमती जी शोभा, सहायक निदेशक (राजभाषा)

सुश्री डिंपल साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य

अध्यक्ष

श्री ए पी वी एस प्रसाद, उत्कृष्ट वैज्ञानिक,
मुख्य कार्यपालक (उड़नयोग्यता)

उपाध्यक्ष

श्री संजीव कुमार झा, समूह निदेशक(प्रबंधन सेवाएँ)

सदस्य सचिव

श्रीमती जी शोभा, सहायक निदेशक (राजभाषा)

सदस्य

श्री एस एन गिरि, निदेशक(हेलिकॉप्टर्स)
डॉ शिरीष काले, निदेशक (एम एंड पीआई)
डॉ ए के बाकरे, निदेशक(वायुयान)
श्री राघवेंद्र एल एन, निदेशक(प्रणोदन)
डॉ बेनुधर साहू, स.नि.(प्रणोदन)
श्रीमती अनिता अलेक्सांड्रा, क्षे.नि.(वायुयान- आर एंड डी)
श्री अरुल कुमरेसन डी, क्षे.नि.(हेलिकॉप्टर्स)
श्रीमती एन ए अनुराधा, क्षे.नि. (सॉफ्टवेयर)
श्री गिरिधारी कुमार, क्षे.नि (इंजन्स)
डॉ पीटर अरुण , क्षे.नि. (वायुयान)
श्री जे कृष्ण कुमार, क्षे.नि. (एपीएस)
डॉ मैथ्यूस पी सैम्यूल, क्षे.नि.(जीटीआरई)
श्रीमती सीएम भुवनेश्वरी, क्षे.नि. (एफ एंड एफ)
श्री केवीएससी शास्त्री, मुख्यस्थ, एचआरडी
श्री आदित्य कुमार मिश्र, मुख्यस्थ, राजभाषा
श्री अरुण कुमार यादव, मु.प्र.अ
सुश्री डिंपल साव, क.अ.अ

अनुक्रमणिका

साहित्यिक खंड

क्र सं	विषय वस्तु	लेखक	कार्यालय	पृष्ठ संख्या
1.	अजनबी दोस्त	श्री आशुतोष, वै.ई	आर.सी.एम.ए (लखनऊ)	10-12
2.	संघर्ष ही जीवन है	श्री प्रकाश यादव, त.अ.ए	आर.सी.एम.ए (हेलिकॉप्टर्स)	13
3.	ओड़िशा की बहनागा ट्रेन दुर्घटना- सच्चाई और अंधविश्वास	श्री प्रशांत कुमार परिडा, व. नि.स	आर.सी.एम.ए (कोरापुट)	14-15
4.	ये कैसी प्रतिस्पर्धा !	डॉ. प्रज्ञा मिश्रा, त.अ.बी	आर.सी.एम.ए (लखनऊ)	16-19
5.	रेल यात्रा	श्री विनय कुमार, वै.ई	आर.सी.एम.ए (जीटीआरई)	20-23
6.	कुछ तो लोग कहेंगे	सुश्री गौरी सेन, आशुलिपिक	आर.सी.एम.ए (लखनऊ)	24-27
7.	अस्ट्रॉलजी एवं राशिफल	श्री बी.के वार्ष्णेय, त.अ.सी	आर.सी.एम.ए (प्रक्षेपास्त्र)	28-30
8.	समय	श्री डी अरूल कुमरेसन, वै.एफ	आर.सी.एम.ए (हेलिकॉप्टर्स)	31
9.	बहाव के सामने	श्री तपन उपाध्याय, एम.टी. एस	सेमिलाक, बेंगलूरु	32
10.	मेरा मन मेरा वन	श्री प्रशांत कुमार, वै.ई	आर.सी.एम.ए (जीटीआरई)	33-35
11.	लाल पोहा	श्री सुरेश ज्ञान रंजन करडा, वा.चा.क	सेमिलाक, बेंगलूरु	36
12.	सामाजिक परिवर्तन क्या है? अर्थ, परिभाषा, प्रकार, विशेषताएं एवं कारण	श्रीमती रश्मि वार्ष्णेय, श्री बी. के वार्ष्णेय की पत्नी	आर.सी एम.ए (प्रक्षेपास्त्र)	37-46
13.	बेरोजगारी से रोजगार तक का सफर	सुश्री डिंपल साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	सेमिलाक, बेंगलूरु	47-48

कविता खंड

क्र सं	विषय वस्तु	लेखक	कार्यालय	पृष्ठ संख्या
1.	फोन कॉल	सुश्री सृष्टी नागर, तकनीशियन ए	सेमिलाक, बेंगलूरु	50
2.	रिश्तों को समझिए और...	श्री जितेंद्र कुमार, कनिष्ठ विशेषज्ञ-II	आर.सी.एम.ए (कोरापुट)	51
3.	बचपन	श्री कमलेश कुमार, व.त.स.बी	सेमिलाक, बेंगलूरु	52
4.	पत्नी	श्री अरुण कुमार शुक्ल, वै.एफ	सेमिलाक, बेंगलूरु	53-54
5.	खिड़की	डॉ प्रज्ञा मिश्रा, त.अ.बी	आर.सी.एम.ए (लखनऊ)	55
6.	रामनामी	श्री प्रदीप कुमार शुक्ल, वै.एफ	आर.सी.एम.ए (लखनऊ)	56
7.	ज़िंदगी	श्री कृष्ण प्रसाद नायक, एम.टी.एस	आर.सी.एम.ए (कोरापुट)	57
8.	माँ	सुश्री रीतु, डाटा एंट्री ऑपरेटर	आर.सी.एम.ए (चंडीगढ़)	58-59
9.	हे मातृभूमि !	श्री सोना कमलेश परिदा, कनिष्ठ विशेषज्ञ-I	आर.सी.एम.ए (कोरापुट)	60
10.	दुनिया में रोशन नाम करो	श्री तपन उपाध्याय, एम.टी. एस	सेमिलाक, बेंगलूरु	61
11.	हे प्रभु !	श्री अमित सिंह, व.त.स.बी	सेमिलाक, बेंगलूरु	62
12.	परिवार के विभिन्न अर्थ	श्री आसिफ के, वा.चा.ए	सेमिलाक, बेंगलूरु	63
13.	समय और रिश्तें	श्री कुलदीप, तकनीशियन	सेमिलाक, बेंगलूरु	64
14.	ज़िंदगी के नाम	श्री आबिद अहमद, व.त.स.बी	सेमिलाक, बेंगलूरु	65
15.	बेटी	श्री मल्ला वीरा प्रसाद, त.अ.ए	आर.सी.एम.ए (एफ एंड एफ)	66
16.	खुश रहिए	श्री रिनीथ रिचर्ड, व.त.स.बी	सेमिलाक, बेंगलूरु	67
17.	कभी...इश्क तो हुआ होगा	श्री मल्ला वीरा प्रसाद, त.अ.ए	सेमिलाक, बेंगलूरु	68
18.	शादी	सुश्री नीरज कर्दम, व.त.स.बी	सेमिलाक, बेंगलूरु	69
19.	जान लगा देना पर जान गँवाना नहीं	श्री संजय कुमार संजय, वै.ई	आर.सी.एम.ए (वायुयान)	70-71
20.	फिर भी तुम हँसना खिल-खिलाकर, बेखौफ होकर	श्रीमती देवकुमारी, त.अ.सी	आर.सी.एम.ए (चंडीगढ़)	72
21.	"हिंदी की अनोखी दुनिया"	श्री मधुराज कुमार, प्र.स.बी	सेमिलाक, बेंगलूरु	73
22.	हिंदी की विशेषता	श्रीमती के शन्मुगप्रिया, वै.एफ	आर.सी.एम.ए(एफ एंड एफ)	74
23.	समोसा की महिमा	श्री अरुण कुमार, वै.एफ	आर.सी.एम.ए (लखनऊ)	75
	हिंदी विभाग द्वारा वर्ष 2023-24 के अंतर्गत की गई कार्रवाईयां			76

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व पूर्णतः संबंधित लेखकों का है। रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों की निजी अभिव्यक्ति है। सेमिलाक, हिंदी सेल अथवा संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्र व्यवहार का पताः

मुख्य कार्यपालक (उड़नयोग्यता)

सेना उड़नयोग्यता और प्रमाणीकरण केंद्र (सेमिलाक)

रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, रक्षा मंत्रालय

मारत्तहल्ली कालोनी पोस्ट

बेंगलूरु – 560 037

सेमिलाक स्थापना दिवस - 2023

इंडस्ट्री मीट

साहित्यिक खंड

आशुतोष कुमार, वै.ई
आर.सी.एम.ए (लखनऊ)

अजनबी दोस्त

विक्रम की 12वीं की परीक्षा समाप्त हो चुकी थी तथा आगे की पढ़ाई की योजना बना रहा था। रोज की तरह खाने के बाद टहलते हुए वह अपने घर के पीछे जंगल की तरफ निकल गया। कैरियर की योजना बनाते-बनाते वह कितनी दूर निकल गया उसे पता ही नहीं चला। परीक्षा की समाप्ति के अब दो वर्ष बाद पहली बार उसे इतनी तसल्ली से टहलने का मौका मिला था। तभी उसे कुछ दूरी पर नीले रंग का एक चमकदार प्रकाश दिखा। वह कौतूहलवश उस प्रकाश की तरफ बढ़ता चला गया। वहां उसे कैप्सूल की तरह का एक यंत्र दिखा।

अभी वह यंत्र को देख ही रहा था कि तभी उसे पास की झाड़ी से कुछ फरफराहट की आवाज सुनाई दी। जब उसने वहां ध्यान से देखा तो उसे एक लंबी-सी आकृति दिखाई दी। उसकी आकृति तथा रंग-रूप इंसान से थोड़ा अलग था। विक्रम उस आकृति की ओर बढ़ा तथा उसने पूछा तुम कौन हो और कहां से आए हो? परंतु उस आकृति ने कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि उसने विक्रम की ओर अपना हाथ बढ़ाया। विक्रम पहले तो घबराया परंतु हिम्मत करके अपना हाथ उस आकृति के हाथ में दिया। आकृति ने विक्रम के हाथ को हल्के से दबाया तथा कुछ देर के बाद उसके हाथ को छोड़ दिया। फिर आकृति बताता है " मेरा नाम मिकस है। पृथ्वी से कुछ हजार प्रकाश वर्ष की दूरी पर लुमा नाम का एक ग्रह है जोकि लगभग पृथ्वी की तरह ही है पर वहां का विज्ञान पृथ्वी से दो सौ वर्ष आगे है। मैं उसी ग्रह से यहां वर्महॉल के रास्ते से आया हूं। वर्महोल द्वारा यात्रा करने से अंतरिक्ष में दो स्थानों के बीच दूरी काफी कम हो जाती है। वर्महोल का निर्माण एक ब्लैकहोल द्वारा अपने गुरुत्व से अंतरिक्ष के समय-स्थान के चतुर्विमीय वक्र में परिवर्तन करने के कारण होता है। विक्रम उसे अपनी भाषा में बात करता देख सन्न रह जाता है। वह आश्चर्यचकित होकर पूछता है, "तुम हमारी भाषा में कैसे बात कर पा रहे हो"? मिकस बताता है "मैंने तुम्हारे हाथ को पकड़ कर कोल्ड शॉक सक्रिय कर तुम्हारे हाथों में ठंडी लहर का संचार किया जिससे तुम्हारे मस्तिष्क में "इसका हाथ कितना ठंडा है" वाक्य कौंधा। इस वाक्य के प्रति तुम्हारे दिमाग में उत्पन्न विद्युत विभव को मेरे मस्तिष्क में लगे प्रॉसेसर ने स्कैन कर पढ़ लिया तथा उसे पहले से परिभाषित विद्युत सिग्नल से तुलना कर मेरे दिमाग में लगे एआई प्रॉसेसर ने कैलीब्रेट कर तुम्हारी भाषा जान ली है। अतः अब मैं तुमसे तुम्हारी भाषा में बात कर पा रहा हूँ। एक लंबी सांस खींच कर मिकस आगे बताता है, "वहां हमने विज्ञान की काफी प्रगति की है। अपनी प्रगति के क्रम में हमने प्रकृति का अंधाधुंध शोषण किया, बहुत सारे जंतुओं एवं वनस्पतियों का हमने विनाश कर दिया। लेकिन अब इसका दुष्परिणाम हमने देख लिया है। ग्लोबल वार्मिंग, शुद्ध वायु का अभाव, वायुप्रदूषण, जैव-विविधता का विनाश के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है एवं उस ग्रह पर हमारा निवास करना अब मुश्किल हो गया है। अब हमने अपने नैसर्गिक प्रकृति का महत्व ठीक से समझ लिया है और हम इसे अपने वास्तविक रूप में लाना चाहते हैं"। विक्रम आश्चर्यचकित होकर सारी बातें ध्यान से सुन रहा था।

मिकस ने आगे कहा "प्राकृतिक परिवेश से दूर जाने की वजह से हमारे यहां कैंसर एवं गंभीर अनुवांशिक बीमारियाँ अत्यंत व्यापक हो गई हैं। एक नई खोज में पता लगा है कि पूर्व काल में हमारे ग्रह पर पाए जाने वाले कुछ पौधों के जीन में ऐसे डीएनए पाए जाते हैं जो गुणसूत्र के ट्रांसलोकेसन को रोकते हैं। इन डीएनए को बैक्टेरियोफेस वायरस के प्लैसमिड में संलग्न कर इस जीन का पीसीआर द्वारा आवर्धन कर हम अपने स्टेम कोशिकाओं में संयोजित कर इन बीमारियों के लिए जिम्मेदार गुणसूत्रों के ट्रांसलोकेशन को

नियंत्रित कर सकते हैं। परंतु विकास की अंधाधुंध दौड़ में हमने इन महत्वपूर्ण पौधों को खो दिया है। वापस इन्हें अपने यहां लगाने के लिए हमें इन कुछ विशेष वनस्पतियों की जरूरत है, जिनके कुछ पौधों की तस्वीर को मैं पहचान के लिए अपने साथ लाया हूँ। लेकिन मैं काफी प्रयत्न करने के बाद भी इन्हें ढूंढ नहीं पा रहा हूँ। क्या तुम इसमें मेरी कुछ मदद कर पाओगे? इतना कहकर मिकस अपने थैले से कुछ पौधों की तस्वीर निकालकर विक्रम को दिखाता है। विक्रम इन पौधों की तस्वीर को ध्यान पूर्वक देखता है। अचानक विक्रम के चेहरे पर हल्की मुस्कान आ जाती है और वह बोलता है "आरंभ से ही मेरी वनस्पति विज्ञान में काफी रुचि रही है। मैं जहां भी जाता हूँ, वहां के विविध प्रकार के पौधों को ध्यानपूर्वक देखता हूँ। इन पौधों को मैं पहचानता हूँ। यह पौधे उत्तर दिशा में इस शहर से बाहर यहां से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक झील के किनारे मिलते हैं। लेकिन इतनी रात में वहां पर जाना मुश्किल है"। मिकस विक्रम की बातें सुनकर अत्यंत प्रसन्न हो गया तथा बोला "तुम इसकी चिंता ना करो। झट से मेरे इस वाहन में बैठ जाओ। हम तुरंत इस वाहन द्वारा वहां पहुंच जाएंगे"। उस कैप्सूलनुमा वाहन में बैठकर वे दोनों शहर के बाहर झील के किनारे जा पहुंचते हैं। वाहन से बाहर निकलकर विक्रम झट से उन पौधों के पास पहुंचता है तथा इशारा करके बताता है, यही वे पौधे हैं जिनकी मिकस को तलाश है। मिकस ने शीघ्र ही उनमें से कुछ पौधों को उखाड़ कर अपने थैले में डाल लिया। वे दोनों उस वाहन में बैठकर वापस विक्रम के घर के पास वाले जंगल में पहुंच जाते हैं। मिकस, विक्रम का काफी आभारी होता है। अब वह वापस जाने के लिए विक्रम से कहता है। उसके वापस जाने की बात सुनकर विक्रम कहता है "मुझे तुम्हारी बातें कौतूहल भरी लगी, तुमसे बातें करना मुझे काफी अच्छा लगा। मैं चाहता हूँ कि कुछ समय और तुम यहां मेरे साथ बिताओ"। परंतु मिकस बताता है कि वह काफी समय से यहां आया है तथा उसे अपने ग्रह पहुंचना बहुत जरूरी है क्योंकि और अधिक वक्त तक पृथ्वी पर रहना उसके लिए खतरनाक है। मिकस भी विक्रम से बहुत लगाव महसूस करता है। उसने विक्रम से कहा "तुमने मेरी बहुत मदद की है, तुम मुझे देखकर डरे भी नहीं हो। मैं पृथ्वी पर पहले भी कई बार आ चुका हूँ परंतु सभी मुझसे देखकर भयभीत हो जाते थे। परंतु तुमने मुझे प्रेम से अपना मित्र बनाया और निःस्वार्थ तुमने मेरी मदद की है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा और तुम्हारे ग्रह का कोई भी नुकसान ना हो"। वह आगे बताता है "हमारी गणना के अनुसार चार महीने बाद पृथ्वी से एक विशाल उल्का पिंड के टकराने की प्रबल संभावना है। परंतु इस स्थिति से सामना करने के लिए एक उपाय है"। इतना कह कर वह अपने कैप्सूलनुमा वाहन से एक दूरबीन की तरह का एक यंत्र निकाल कर लाता है । उस यंत्र को विक्रम को सौंपते हुए कहता है "तुम यह यंत्र अपने पास रखो। चार माह के बाद एक विशाल उल्का पिंड पृथ्वी के बेहद करीब आ जाएगा। यह यंत्र तुम उस उल्कापिंड की ओर निर्देशित करना। इस यंत्र से निकलने वाली किरणें उस उल्का पिंड के आकार को स्कैन करके उसकी प्राकृतिक आवृत्ति निर्धारित कर लेगी तथा यह लाल वाला बटन दबाने पर उसी आवृत्ति की विशेष तरंगे उल्का पिंड में हलचल पैदा कर देंगे। अनुनाद के कारण उस पिंड से उसके कण अलग होने लगेंगे तथा उल्का पिंड का द्रव्यमान बदल जाने से उसकी दिशा पृथ्वी की तरफ से परिवर्तित हो जाएगी"। यह कह कर उस अजनबी मित्र ने विक्रम से विदाई ली तथा अपने कैप्सूलनुमा वाहन में बैठ गया। विक्रम हक्का-बक्का होकर उसकी बातें ध्यान से सुन रहा था। मिकस का प्रस्थान करना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। फिर भी भारी मन से उसने उसे विदाई दी । कुछ ही देर में एक चमक के साथ कैप्सूल आकाश में ओझल हो चुका था।

विक्रम इस घटना से अवाक रह गया था। वह घर पर आकर सीधा बिस्तर पर जाकर लेट गया। पर उसे पूरी रात नींद नहीं आई। वह रात भर उस घटना और उस अजनबी ग्रहवासी मित्र के बारे में सोचता रहा। अगले दिन इस पूरी घटना के बारे में उसने अपने अभिभावक तथा मित्रों को बताया एवं उस यंत्र को

भी दिखाया, परंतु किसी ने भी उसकी बातों का यकीन नहीं किया। धीरे-धीरे समय बीतता गया और विक्रम भी अपने प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी में जी-जान से जुट गया। लगभग चार महीने बाद एक दिन प्रातः समाचार पत्र के मुखपृष्ठ पर छपे समाचार से विक्रम हक्का-बक्का रह गया। उसमें लिखा था 'एक विशाल उल्का पिंड पृथ्वी की ओर आ रहा है और अगले कुछ दिनों में उसके पृथ्वी से टकराने की संभावना है। पूरे विश्व के वैज्ञानिक पूरी तत्परता से उल्का पिंड से पृथ्वी के बचाव का उपाय सोच रहे हैं, परंतु इसका कोई विश्वस्त समाधान नहीं मिल पा रहा है'। उसके अभिभावक तथा मित्र भी यह समाचार पढ़कर आश्चर्यचकित थे तथा उन्हें अब विक्रम की बताई बातों पर थोड़ा-बहुत यकीन तो आ गया फिर भी उन्हें मिकस के दिए गए यंत्र पर संदेह था। विक्रम तुरंत ही इंटरनेट एवं समाचार चैनल द्वारा उल्कापिंड के पृथ्वी की ओर बढ़ने की गति, दूरी एवं दिशा की जानकारी लेने लगा। अगली रात वह घर से कुछ दूरी पर एक बहुत बड़े मैदान में अपने कुछ दोस्तों के साथ गया तथा उसने अपने मित्र मिकस द्वारा दिए गए यंत्र को आकाश में उल्का-पिंड की दिशा में घुमाया। इसके उपरांत उसने वह लाल बटन दबाया। उसे अपने मित्र तथा उसके दिए गए यंत्र पर पूरा यकीन था। वापस घर पहुंच कर पूरी रात वह उल्का पिंड की पृथ्वी से टकराने का समाचार देखता रहा साथ ही अपने मित्र मिकस से मुलाकात के बारे में से सोचता रहा। इसी बीच नीचे से उसके पिता की प्रसन्नता से भरी आवाज आई "पृथ्वी से टकराने वाले उल्का-पिंड का खतरा टल चुका है, न जाने कौन सी अज्ञात शक्ति ने उल्कापिंड के टुकड़े कर दिए हैं तथा उसने अपनी कक्षा बदल दी है"।

यह सुनते ही विक्रम ख़ुशी से झूम उठा लेकिन साथ ही मिकस की याद में आज फिर से विक्रम की आँखें भर आई। मिकस को धन्यवाद देने को तत्पर हो उसने फिर से खिड़की से आकाश की तरफ देखा। उसे लगा मिकस उसे दूर अपने ग्रह से बधाई दे रहा है।

प्रकाश यादव, त.अ.ए
आर.सी.एम.ए (हेलिकॉप्टर्स)

संघर्ष ही जीवन है

एक लड़का था। उसे बचपन से ही अच्छी पुस्तकें पढ़ने का शौक था और वह हमेशा विभिन्न प्रकार की किताबें पढ़ता रहता था। लेकिन उस लड़के की एक आँख ख़राब थी जिसके चलते वह जब पुस्तकों का अध्ययन करता था तो उसकी आखों पर बहुत अधिक जोर पड़ता था जिसके कारण आगे चलकर उसके आँखो में दर्द की शिकायत होने लगी थी। जब डॉक्टर को दिखाया उन्होंने उसे पढ़ने से मना कर दिया और कहा कि यदि तुम अपनी दूसरी आँख पर ज्यादा जोर दोगे तो वह आँख भी ख़राब हो सकती है। लेकिन उस लड़के ने डॉक्टर की बात नहीं मानी और अपनी पढ़ाई जारी रखी।

उसके परिवार वाले जब उसको समझाने लगे तो उसने कहा कि मैं तभी पढ़ना बंद कर सकता हूँ जब कोई मुझे ये किताबें पढ़ कर सुनाता रहे। इसके लिए लड़के के घर वाले तैयार हो गए।

वह लड़का इसी तरह पढ़ता रहा और उसके घर वालों को जब समय मिलता तब लड़के को किताबें पढ़कर सुना देते जिससे वह लड़का याद कर लेता।

लड़का अपनी दृढ़ इच्छा के चलते अपनी डिग्री की परीक्षा भी पास कर लिया और फिर वह आगे भी नहीं रुका।

लड़के ने अपनी पढ़ाई जारी रखी। वह अपने विचारों को दूसरों की सहायता से लिखवाता। जब उसके द्वारा लिखे गई लेख के विषय, पुस्तक में छपने लायक हो जाता था तो वह उनको किताबों में छपवा देता था।

इस प्रकार उस लड़के ने कई महान पुस्तकें लिखी जो जीवन की सकारात्मक पहलू को दर्शाते थे ।

अगर हमें अपने जीवन में जो भी कुछ बनना है तो सबसे पहले हमें उसके लिए अपना लक्ष्य जरूर बनाना चाहिए। फिर उसके बाद यदि हम दिन-रात अथक मेहनत और प्रयास करेंगे तो निश्चित ही हमें भी एक दिन सफलता जरूर मिलेगी और ये सब करने के लिए सिर्फ जरूरत है मन ठान लेने की एवं सफलता पाने के लिए अपना सारा ध्यान उस पर फोकस करने की। तब निश्चित ही हम वह सबकुछ हासिल कर सकते हैं जो हमारे मन में है ।

जीवन में प्रयास और संघर्ष करके सब कुछ पाया जा सकता है और जितने भी लोगों ने संघर्ष किया है, इतिहास में उनका नाम हमेशा लिखा और याद किया जाता है। हमेशा आगे आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी बताया जाता है- संघर्ष ही जीवन है और जीवन ही संघर्ष है ।

प्रशांत कुमार परिडा, व.नि.स
आर.सी.एम.ए (कोरापुट)

ओड़िशा की बहनागा ट्रेन दुर्घटना - सच्चाई और अंधविश्वास
(सच्ची घटना पर आधारित)

बहनागा बाजार स्टेशन, ओड़िशा राज्य के बालासोर जिले का एक छोटा-सा ग्रामीण स्टेशन, जहां भारत की सबसे घातक ट्रेन दुर्घटना शुक्रवार 2 जून 2023 को लगभग 18:55 (13:25 GMT) कोलकाता से लगभग 270 किमी (170 मील) दक्षिण में हुई थी।

तीन कमरे, जिनके ऊपर एक नालीदार धातु की छत है और तीन प्लेटफार्म स्टेशन बनाते हैं, जो प्रतिदिन 14 ट्रेनों की सेवा प्रदान करता है, जिनमें से आधे से अधिक राज्य के भीतर गंतव्यों के लिए हैं। वहां 10 से भी कम रेलवे कर्मी काम करते हैं। किसी भी दिन, यात्री, जिनमें ज्यादातर आसपास के 25 गांवों के मजदूर होते हैं, नीले और पीले रंग की धारीदार धातु की शामियाना के नीचे उन ट्रेनों का इंतजार करते हैं जो उन्हें राज्य की राजधानी भुवनेश्वर और बालासोर जैसे बड़े शहरों में काम करने के लिए ले जाती है।

बहनागा बाज़ार स्टेशन पर चार ट्रैक हैं। यात्री ट्रेनें ट्रैक दो और तीन पर अलग-अलग दिशाओं में यात्रा कर रही थी। लेकिन किसी कारण से 128 किमी/घंटा (79.5 मील प्रति घंटे) की गति से यात्रा कर रही कोरोमंडल एक्सप्रेस अपनी लाइन छोड़कर लूप लाइन में प्रवेश कर गई और एक स्थिर मालगाड़ी के पिछले हिस्से से टकरा गई। मालगाड़ी लौह अयस्क से भरी हुई थी। अधिकारियों का कहना है कि टक्कर का पूरा असर यात्री ट्रेन पर पड़ा। इस टक्कर के कारण कोरोमंडल एक्सप्रेस के 21 डिब्बे पटरी से उतर गए और वे बगल की पटरियों पर गिर गए। जैसे ही दुर्घटना हुई, हावड़ा सुपरफास्ट एक्सप्रेस 126 किमी/घंटा (78 मील प्रति घंटे) की गति से विपरीत दिशा से गुजर रही थी। पटरी से उतरी कोरोमंडल एक्सप्रेस के डिब्बे हावड़ा सुपरफास्ट के पिछले दो डिब्बों से टकरा गए, जिससे वे पटरी से उतर गए।

जिसमें आधिकारिक तौर पर 288 लोग मारे गए और 1000 से अधिक घायल हो गए।

मृत यात्रियों के शवों को एक स्थानीय 65 वर्षीय शैक्षणिक संस्थान, बहनागा बाजार हाई स्कूल में ले जाया गया, जिसे मुर्दाघर में बदल दिया गया। घायलों को सोरो, बालासोर, भद्रक और अन्य आसपास के इलाकों के सरकारी अस्पतालों में ले जाया गया। जलने या अन्य आघात के कारण शवों की पहचान करना अधिक कठिन हो गया था, जिसके कारण अधिकारियों को यात्रियों की पहचान करने के लिए सामान, फोन और अन्य सामानों का उपयोग करना पड़ा। रेल सेवा में केवल आरक्षित सीट वाले यात्रियों के नाम थे, जहां बिना टिकट वाले कई यात्रियों की पहचान नहीं हो पाई।

बचाव दल शनिवार सुबह तक सैकड़ों यात्रियों के शव बरामद करते रहे। सरकार और रेलवे अधिकारियों के पास मृतकों की पहचान करने और उनके परिजनों को सौंपने के लिए ओल्ड हाई स्कूल का उपयोग करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। बहनागा हाई स्कूल ने सैकड़ों रोते-बिलखते परिवारों को अपने निकट और प्रियजनों के शवों की तलाश में आकर्षित किया।

25 शव आज तक लावारिस हैं। इतने संवेदनशील मामले पर अकेले भारतीय रेलवे, एम्स या सीबीआई कोई फैसला नहीं ले सकती। यह निर्णय जल्द ही ओड़िशा सरकार के समन्वय से रेलवे, गृह मंत्रालय और स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से लिया जाएगा।

शिक्षक, अभिभावक और छात्र उन कक्षाओं में बने रहने का विरोध कर रहे थे जहाँ शव रखे जाते थे और अस्थायी शवगृह के रूप में उपयोग किया जाता था। जब छात्र कक्षाओं में जाने के लिए अनिच्छुक थे तो ओड़िशा सरकार ने 65 साल पुरानी बहनागा हाई स्कूल की इमारत को ध्वस्त कर दिया।

दुर्घटना का दूसरा पक्ष स्थानीय लोगों और आसपास के ग्रामीणों ने बताया कि वहां एक इमली का पेड़ था और वह पेड़ बहुत पुराना (दो से तीन पीढ़ी पुराना) था और कुछ लोग भक्ति से और कुछ भय से उस पेड़ की पूजा करते थे। पुराने इमली के पेड़ को नहीं काटने के उनके आह्वान के बावजूद रेलवे अधिकारियों ने गुरुवार को जबरन पेड़ काट दिया और शुक्रवार को यह दुर्घटना हो गई। लोगों ने पेड़ के अंदर/आस-पास तीन त्रिशूल देखने को पाये।

स्टेशन के आसपास और गांव के लोग अभी भी कह रहे हैं कि आधी रात को रोने की आवाजें आ रही हैं और वे स्टेशन की तरफ नहीं जा रहे हैं।

यह घातक दुर्घटना कैसे हुई स्पष्ट नहीं है। पूरा विवरण अभी भी उपलब्ध नहीं है। रेलवे ने बहुत कम विवरण के साथ एक अधूरा आधिकारिक बयान जारी किया है। रेलवे प्राधिकरण ने बताया कि कम्प्यूटरीकृत त्रुटि की संभावना न्यूनतम है। यह एक मानवीय त्रुटि हो सकती है या यह बाहरी हस्तक्षेप हो सकता है और केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा एक अलग जांच की सिफारिश की गई है।

डॉ प्रज्ञा मिश्रा, त.अ.बी
आर.सी.एम.ए (लखनऊ)

ये कैसी प्रतिस्पर्धा !

सुबह के रश आवर्स में ओला/उबर की कैब बुकिंग न मिल पाने से राहुल सिटी बस के स्टॉप पर खड़ा था। सिटी बस के आते ही राहुल उसमें तेज़ी से चढ़ गया। उसे किसी भी तरह अपने गंतव्य तक पहुंचना था। बस में एक विंडो सीट खाली दिखी तो राहुल वहीं बैठ गया। सुबह की ताज़ी हवा के ठंडे झोंके उसके चेहरे पर एक सुकून-सा दे रहे थे। वह कल रात ही तो इस नए शहर में इंटरव्यू देने आया है। राहुल के पास भारत की टॉप यूनिवर्सिटी से मास कॉम में परास्नातक की डिग्री है और उसने स्थानीय न्यूज़ चैनल से मीडिया रिपोर्टिंग में इंटर्नशिप भी की है। राहुल मन में यह सोच कर खुश था कि मेरे लिखे गए आर्टिकल तो पहले भी काफी सराहे जा चुके हैं और फ़ील्ड रिपोर्टिंग का अनुभव भी इंटर्नशिप के दौरान है ही। इसलिए इस प्रख्यात चैनल में तो मुझे नौकरी मिल ही जानी चाहिए। हालाँकि बढ़ते प्रतिस्पर्धा की दौर में वह थोड़ा नर्वस भी था। लेकिन युवा होने और इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने के उत्साह से वह जोश से भरा भी था। वह एक प्रसिद्ध न्यूज रिपोर्टर बनना चाहता था। उसे सामयिक मुद्दों पर डिबेट करना, समाज के मुद्दों को उठाकर आम जनता की आवाज बन कर उनको सरकारी महकमों और राजनीतिज्ञों तक पहुँचाने की इच्छा थी। वह मीडिया में एक ऐसा चेहरा बनना चाहता था जिसकी पहचान हर घर में हो।

आज उसे किसी भी तरह इंटरव्यू के लिए समय पर पहुंचना ही था। इंटरव्यू के लिए रिपोर्टिंग का समय सुबह 09 बजे था। रात की बारिश से सड़कों पर जमा हुए पानी ने पूरे शहर में ट्रैफिक का लम्बा जाम लगा रखा था। राहुल ने कलाई में लगी अपनी घड़ी पर नज़र दौड़ाई तो देखा कि उसके पास तो अभी काफी समय है। खैर देखते-देखते राहुल का स्टॉप आ गया और राहुल अब तेजी से बस से उतरकर न्यूज़ चैनल के ऑफिस पहुँचने के लिए चल पड़ा। बस स्टॉप से कुछ ही दूरी पर ऑफिस था। इसलिए राहुल को गूगल मैप की मदद से वहां पहुँचने में ज्यादा समय नहीं लगा। राहुल न्यूज-चैनल के दफ्तर में प्रवेश किया और इंटरव्यू एरिया में पहुंचा।

वहां उसने देखा कि प्रतीक्षालय परिसर में लगी कुर्सियों पर पहले से ही कुछ इंटरव्यू कैंडिडेट्स बैठे हुए हैं। वह भी एक खाली जगह देखकर बैठ गया। उसके बगल में एक युवक बैठा हुआ था। यह युवक देखने में बहुत ही आकर्षक और सलीकेदार लग रहा था। उसे देखकर राहुल ने मन ही मन सोचा कि यह तो टीवी पर दिखने के लिए बहुत ही आकर्षक है। कहीं मैं इससे पीछे ना रह जाऊं.... खैर मन में आ रहे ऐसे ख्यालों को हटाते हुए राहुल ने सोचा कि चलो इससे कुछ बात की जाये और इंटरव्यू की घबराहट को दूर किया जाय।

राहुल युवक की तरफ मुड़ा और उससे कहा- “हाय, आई एम राहुल एंड आई एम हियर टू अपिअर इन द इंटरव्यू फॉर द पोस्ट ऑफ़ न्यूज़ रिपोर्टर”। उस व्यक्ति ने बड़ी ही गर्मजोशी से उससे हाथ मिलते हुए उत्तर दिया - “हेलो, आई एम प्रखर। आई हैव कम हियर फॉर द सेम। नाईस मीटिंग यू”। पर इस छोटी-सी मुलाकात में ही राहुल को प्रखर के बोलने का ढंग कुछ अलग-सा लगा। थोड़ा गौर किया तो उसे प्रखर की आँखों की भंगिमाएं भी सामान्य से कुछ अलग ही लगीं। खैर, राहुल ने बात का सिलसिला आगे बढ़ाते हुए

उससे कहा- "मैंने नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ मास कॉम से मास्टर्स किया है और इंटर्नशिप के दौरान अपने शहर के सिटी लाइव चैनल से फील्ड रिपोर्टिंग भी की है"।

प्रखर ने फिर एक सधी हुई मुस्कान के साथ राहुल को उसकी अब तक की उपलब्धियों के लिए शाबाशी दी। अब उसने अपने बारे में बताना शुरू किया। उसने बताया – "मैं आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस (AI) जनरेशन-10 बेस्ड सोशल ह्युमनोइड रोबोट हूँ और मैं एक रिपोर्टर बनने के लिए ही ख़ास तौर पर बनाया गया हूँ। मुझमें न्यूज़ रिपोर्टिंग के लिए स्पेशल प्रोसेसर और चिप्स लगी हैं जो पूरी दुनिया की न्यूज़ रिपोर्टिंग के तरीकों और सूचनाओं से भरी गई है। मेरे अंदर 1000 टेरा बाईट का डाटा फीड है और नई सूचनाओं को स्टोर करने के लिए भी 1000 टेरा बाईट का मेमोरी स्पेस दिया गया है। साथ ही मैं भारतीय और विदेशी भाषाओं को मिलाकर कुल 150 प्रकार की भाषाएँ बोल सकता हूँ"।

यह सुनकर तो राहुल की आँखें फटी रह गई। उसने मन ही मन सोचा कि क्या आज इंटरव्यू में मेरा कंपटीशन एक एआई बेस्ड ह्युमनोइड रोबोट से होगा। उसके मन में कई सवाल आये। खैर राहुल ने मन में तेज़ी से दौड़ रहे ढेर सारे सवालों को संभालते हुए अगला प्रश्न पुछा– "तुम इस पद के लिए कैसे आवेदन कर सकते हो, क्यूंकि आयु, जाति, शिक्षा आदि अर्हताओं में तुम कैसे फिट होते हो?" प्रखर ने जवाब दिया- "इस पद के लिए एक ऐसा विज्ञापन भी निकाला गया था जहाँ विशेष तकनीकी आवश्यकताओं/मानकों के अनुरूप सेवा देने हेतु मानव रोबोट की आवश्यकता के लिए कंपनी से आवेदन मांगे गए थे। मुझे विजन एआई रोबोटिक्स कंपनी ने बनाया है। मेरी कंपनी ने मुझे इस पद के लिए ही तैयार किया है। मेरी कंपनी विभिन्न प्रकार की सेवाओं और उनसे संबंधित पदों के लिए एआई बेस्ड ह्युमनोइड रोबोट का निर्माण करती है।"। अब राहुल यह सोचने लगा कि इसके अंदर न जाने कितनी सूचनाओं/डेटा का अंबार भरा है। मेरा अनुभव, ज्ञान और समझ तो इसके अंदर फीड किये गए डेटा का एक बहुत छोटा-सा हिस्सा है। अगर बात घटनाओं और सूचनाओं को रिकॉल करने की हुई तो मैं तो इसके आगे कहीं भी नहीं टिकता। यह सोच कर राहुल का मन निराश होता जा रहा था।

तभी उसने देखा कि कुछ ही समय में और भी ह्युमनोइड रोबोट्स कैंडिडेट्स भी वेटिंग एरिया में रखी कुर्सियों पर आकर बैठ चुके थे। राहुल ने सोचा ये क्या! यहाँ तो एक मानव से प्रतिस्पर्धा में मानव द्वारा निर्मित रोबोट ही है। और हाँ... अलग अलग स्पेशल फीचर्स से लैस AI बेस्ड ह्युमनोइड रोबोट भी आपस में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। राहुल सोच रहा था- आयु, शिक्षा और ज्ञान में वह इनसे अपनी तुलना कैसे कर पायेगा? उसने आज तक जो भी सीखा है, वह अपनी मेहनत, अपने शिक्षकों के द्वारा दिए गए मार्ग-दर्शन, अनुभव और अपनी सीखने की जिज्ञासा से सीखा है। लेकिन इन ह्युमनोइड रोबोट्स को तो तकनीकी ज्ञान से समृद्ध मानव समूह ने अपने-अपने ज्ञान, विश्लेषण क्षमता, अनुभव का प्रयोग करते हुए स्पेशल चिप, स्मार्ट एक्चुएटर्स, एडवांस सेंसर्स, तीव्र-गति के प्रोसेसर्स, अधिक मेमोरी पॉवर और मानवीय शारीरिक संरचना की नक़ल का अद्भुत संग्रह करके बनाया है। इनके पास उपलब्ध सूचनाओं का अपार भंडार और याददाश्त की अपार क्षमता है। यहाँ उपस्थित सभी ह्युमनोइड रोबोट लगभग इसी आधार पर बनाये गए हैं। शारीरिक संरचना के साथ-साथ इन रोबोट्स में बहुत सारे गुण मानव के मस्तिष्क से मिलते-जुलते है। जैसे

प्रतिक्रिया देना, देखना, छुवन महसूस करना, सुनना, विश्लेषण करना। पर इन सबमें कुछ तो ऐसी चीज़ होगी जो मानव जैसी नहीं है।

राहुल का दिमाग अब तेज़ी से इस प्रश्न की तरफ दौड़ रहा था... कि अगर मुझसे ये प्रश्न इंटरव्यू बोर्ड में पुछा जाय कि मैं न्यूज़ रिपोर्टिंग में इन ह्युमनोइड रोबोट्स से कैसे बेहतर हो सकता हूँ तो इसका जवाब क्या होगा? ....उसके मन से एक जवाब आया- इमोशंस (भावनाएं/संवेग)। उसने मन ही मन अपने जवाब को उचित सिद्ध करने के लिए विचारों की एक झड़ी-सी लगा दी। भावनाएं मनुष्य को ह्युमनोइड रोबोट से अलग और बेहतर बनाती है। प्रेम, दया, सहानुभूति, समानुभूति, जिज्ञासा जैसी भावनाओं का समावेशी संकलन ही मनुष्य को पृथ्वी पर उपस्थित सभी जीवों से श्रेष्ठ बनाता है और इस AI आधारित ह्युमनोइड रोबोट से भी। अभी राहुल अपने इन्हीं विचारों की उधेड़-बुन में लगा ही था कि उसका नाम इंटरव्यू के लिए बुलाया गया। न्यूज रिपोर्टिंग में मानवीय संवेदनाओं जैसे गुण की विशेष आवश्यकता है और यहीं मानव का श्रेष्ठ गुण भी है। ऐसा सोचकर राहुल ने आत्मविश्वास के साथ कमरे के अंदर प्रवेश किया। इंटरव्यू शुरू हुआ। बोर्ड के सदस्यों ने राहुल से ढेर सरे प्रश्न किये।

राहुल ने अपनी समझदारी का परिचय देते हुए पूरे आत्मविश्वास से सभी प्रश्नों के उत्तर दिए। अब आखिरी में बोर्ड की तरफ से पुछा जाने वाला वह प्रश्न जिसका अनुमान राहुल को पहले से ही था, "आप एआई आधारित ह्युमनोइड रोबोट्स से बेहतर कैसे हैं? राहुल इस प्रश्न से बिल्कुल भी नहीं घबराया उसने बहुत ही शांत होकर जवाब दिया "श्रीमान, मैं जानता हूँ कि एआई आधारित मानव रोबोट में अदभुत मेमोरी क्षमता है। यह सूचनाओं को रिकाल (recall) कर और डाटा प्रोसेस कर संभवतः हर कार्य को बहुत ही आसानी और अति शीघ्रता से कर सकता है"। राहुल ने अपनी बात और आगे बढ़ाते हुए कहा– "लेकिन एक न्यूज़ रिपोर्टर का संवेदनशील होना पत्रकारिता का एक बहुत महत्वपूर्ण गुण है और मुझमें मानवीय संवेदनाओं की समझ है और नई चीजों को सीखने और समझने की जिज्ञासा भी है। किसी भी सूचना को जानने की उत्सुकता, उसके सही या गलत होने की जिज्ञासा और मानवीय संवेदनाओं को समझ कर उसके अनुरूप व्यवहार करने की मेरी क्षमता इन ह्युमनोइड रोबोट्स से मुझे बेहतर बनाती हैं"। राहुल के इस उत्तर को सुनकर बोर्ड के सभी सदस्यों ने उसके आत्मविश्वास की तारीफ की। लेकिन अब आगे जो हुआ ऐसी उम्मीद राहुल को बिलकुल भी नहीं थी।

बोर्ड के एक सदस्य ने यह बताया कि ह्युमनोइड रोबोट्स में मानवीय संवेदनाओं के गुण भी आ चुके हैं। यहाँ इंटरव्यू के लिए काल किये गए सभी ह्युमनोइड रोबोट्स इस फीचर से युक्त हैं। इन सभी रोबोट्स में इमोशंस के लिए बायोकैमिकल अल्गोरिथम (Biochemical-algorithm) का प्रयोग किया गया है। मानव शरीर में सभी भावनाओं के पीछे विभिन्न प्रकार के बायोकेमिकल ही उत्तरदायी होते हैं। प्रत्येक संवेदना/इमोशन के लिए एक विशेष बिओकेमिकल अभिक्रिया उत्तरदायी होती है। इन रोबोट्स में प्रत्येक भावनाओं से संबंधित विशेष बिओकेमिकल अभिक्रियाओं का एक डाटा स्टोर किया गया है। इस डेटा को शब्दों के रूप में व्यक्त या फेसिअल एक्सप्रेशन से व्यक्त भावनाओं के डेटा से मैपिंग करते हुए परिभाषित किया गया है तथा इस पूरी प्रक्रिया को इन रोबोट्स की मेमोरी में एक बायोकेमिकल अल्गोरिथम के रूप में फीड किया गया है। इसलिए ये बायोकेमिकल अल्गोरिथम, इन एआई बेस्ड ह्युमनोइड रोबोट्स को मानव

के अब तक के इस अद्वितीय गुण का वरदान देते हैं। ये रोबोट्स हर मायने में इंसान से बेहतर ही प्रतीत होते हैं। क्या अब आप और कुछ कहना चाहेंगे मिस्टर राहुल? राहुल निरुत्तर रहा। उसके पास अब और कहने को कुछ नहीं था।

राहुल इंटरव्यू कक्ष से बाहर आ गया। कुछ घंटों के बाद सिलेक्शन लिस्ट चस्पा कर दी गई। राहुल भी तेज क़दमों से चस्पा की गई लिस्ट की तरफ बढ़ा लेकिन ये क्या? चयनित उमीदवारों की सूची में उसका नाम ही नहीं था। हाँ, इस सूची में प्रखर का नाम पहले स्थान पर था। राहुल बहुत निराश हुआ। उसे अपना सपना बिखरता हुआ लगा। उसकी आँखों में उसके बूढ़े-माता पिता का चेहरा तैरने लगा जिन्होंने बड़ी मेहनत से उसे पाल-पोस कर बड़ा किया था और अब जीवन के इस पड़ाव में पूरी तरह से राहुल पर ही निर्भर थे। घर से इंटरव्यू के लिए निकलते वक्त उसके बूढ़े माता-पिता ने चमकती आँखों से उसे विदा किया था और सेलेक्ट होने के लिए ढेर सारा आशीर्वाद भी दिया था।

राहुल सोच रहा था कि लगभग पूरी तरह से बाजारवादी हो चुके समाज में क्या मानव का मूल्य सिर्फ तीव्र-गणनाएं या विश्लेषण करना, उन्नत तकनीकी का प्रयोग करके द्युत-गति से किसी काम को पूरा करना, कम लागत पर अपने प्रोडक्ट्स/सर्विसेज को बेच कर ज्यादा से ज्यादा प्रॉफिट लेना ही है। क्या तकनीकी विकास के साथ सामाजिक विकास के पहलू पर भी ध्यान नहीं देना चाहिये? अगर मेरे जैसा युवा रोज़गार के अवसर ऐसे ही खोते रहे तो हमारे ऊपर निर्भर परिवार का क्या होगा? एक तरफ तो मानवीय संवेदनाओं का प्रयोग करके उन्नत तकनीकी के मानव समान रोबोट बनाये जा रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ असल मानव अपनी इन्हीं संवेदनों को खोता हुआ तकनीकी और बाजारवाद के भंवर में फंसकर शून्य-संवेदना वाला रोबोट बनता जा रहा है। ये कैसी प्रतिस्पर्धा है जहाँ मानव, मानव जैसे रोबोट का निर्माण कर, रोबोट को ही मानव से श्रेष्ठ सिद्ध करने की राह पर चल पड़ा है। इस रास्ते का अंत क्या होगा, कहाँ होगा? ये सोचकर राहुल बुझे मन से अपने घर के रास्ते पर चल पड़ा।

विनय कुमार, वै.ई
आर.सी.एम.ए (जीटीआरई)

रेल यात्रा

शाम के तक़रीबन 6 बजे मेरे फोन का रिंग बजने लगा। देखा तो मेरे बचपन के मित्र रोहित का फोन कॉल था। मैंने फोन को झट से रिसीव किया।

" हां मित्र, कैसे हो? " मैंने रोहित से कहा

" मै ठीक हूँ। तुम बताओ कैसे हो?"

" मैं भी ठीक हूँ मित्र"।

कुछ इधर-उधर की बातें हुईं। मित्र ने घर आने का निमंत्रण दिया। मैंने भी सहर्ष स्वीकार कर लिया और कहा- "जरूर आऊंगा, जब बलिया आने का होगा तो तुमसे अवश्य मिलेंगे"। फोन रखने के बाद घड़ी की तरफ देखा तो घड़ी में 6.15 हो रहा था। घड़ी दफ्तर बंद करने का इशारा कर रही थी। दफ्तर का काम निपटाकर जैसे ही कार पार्किंग में पहुंचा, संदीप जी आते हुए दिखे। सोचा कुछ गुफ्तगू कर ली जाए। बातचीत के क्रम में संदीप जी से पता चला कि ड्राइविंग लाइसेंस भी आधुनिकता के रंग में रंग चुका है और स्मार्ट दिखने लगा है। मैं चकराया तो उन्होनें भाप लिया और अपना स्मार्ट कार्ड वाला ड्राइविंग लाइसेंस दिखाया। मैंने अपना पुराना वाला ड्राइविंग लाइसेंस जेब से निकाला तो वैसी अनुभूति हुई जैसे मरीज को एक्सपायरी दवा को देखकर होती है। मेरे माथे पर पसीने की बूंदे टपकनी शुरू हो गई। कारण था बेंगलुरु ट्रैफिक पुलिस की ड्यूटी के प्रति कर्तव्यनिष्ठा और हर गली और नुक्कड़ पर उनकी उपस्थिति। टैक्स कलेक्शन में बेंगलूरु ट्रैफिक पुलिस के भारी भरकम योगदान को देखते हुए ड्राइविंग लाइसेंस का नवीनीकरण करना मेरे लिए जीवन मरण का सवाल था। मेरा ड्राइविंग लाइसेंस बलिया, उ.प्र का बना हुआ है और सिर्फ ड्राइविंग लाइसेंस के नवीनीकरण के लिए बलिया जाना काफी चुनौतीपूर्ण लगा। थोड़ा शोध करने पर पता चला कि ड्राइविंग लाइसेंस बेंगलूरु में भी बन सकता है लेकिन एजेंट द्वारा नवीनीकरण का खर्च 5 हज़ार बन रहा था। यही काम बलिया में बमुश्किल 1 हज़ार रुपया में हो जाएगा। मेरे लिए यह एक असमंजस की स्थिति थी कि ड्राइविंग लाइसेंस का कार्य बेंगलूरु में कराया जाय या बलिया में। वित्तीय खर्च का आकलन करने पर महसूस हुआ कि आने जाने का खर्च जोड़ने पर बलिया जाना किफ़ायती नहीं था। बहुत सोचने-विचारने के बाद बलिया जाने का फैसला इसलिए किया कि माँ, भाई, मित्र और सगे संबंधियों से मिलना हो जाएगा और ड्राइविंग लाइसेंस का नवीनीकरण कार्य भी हो जायेगा। इस तरह रेल यात्रा का संयोग बना जो करीब एक दशक के बाद मुमकिन हुआ। मध्यम वर्ग वाली मानसिकता से बाहर आने की जद्दोजहद और उच्च वर्ग में प्रवेश की लालसा के बीच यह निर्णय लिया कि बलिया जाने के लिए विमान और वापसी यात्रा के लिए रेल टिकट का आरक्षण बेहतर है।

वैसे किसी सरकारी कार्यालय में काम कराना “नाकों चने चबाने” के बराबर होता है। बलियां के क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आर.टी.ओ) में किसी के माध्यम से एक सज्जन व्यक्ति से जान पहचान थी। पहुँचते ही ड्राइविंग लाइसेंस के नवीनीकरण का आवेदन जमा कर दिया। उस सज्जन व्यक्ति की सज्जनता की वजह से ड्राइविंग लाइसेंस के नवीनीकरण का कार्य बहुत ही आसानी से सम्पन्न हो गया। “नाकों चने चबाने” मुहावरा इसलिए यथार्थ नहीं बन पाया क्योंकि सरकारी कार्यालय में मेरी जान पहचान थी।

अपने दोस्त रोहित के साथ पूरा गाँव भ्रमण बहुत ही आनंदायी था। पाँच दिन कैसे और कब बीत गए पता ही नहीं चला। माता-पिता की नजदीकी और वात्सल्य बहुत ही सुकून भरा लगा। हरे भरे खेतों में घूमना और नदी के किनारे टहलना, ऐसा लगा मानो बचपन को दोबारा जी रहा हूँ। शहर और गांव में जो अंतर है- वह है खुलापन। गांव के लोग बड़े ही गर्मजोशी और खुले दिल से मिलते हैं, शहर के लोग सिकुड़कर मिलना पसंद करते हैं। ऐसा लगता है कि जैसे दिल के अंदर खुंदस हो। मुझे लोगों से मिलकर ऐसा लगा मानो पूरा गांव एक परिवार है, जबकि शहर में लोग अपने पड़ोसी तक को चेहरे से नहीं पहचानते।

पाँचवें दिन, मैं यह सोचकर रोमांचित हो गया कि दस साल के बाद उस रेल यात्रा का संयोग बना है। वह रेल यात्रा जिसमें 50 घंटे बिताने पड़ते हैं। यह रेल यात्रा बक्सर से शुरू होकर बेंगलूरु तक की होती थी और कानों में चाय वाले की आवाज गूंजने लगी। मैंने अपने ट्रेन का आरक्षण बक्सर रेलवे स्टेशन से करा रखा था जिसकी दूरी मेरे घर से 30 कि.मी. है।

मैं यहाँ बक्सर शहर के बारे कुछ बताना चाहता हूँ। बक्सर एक बहुत पुराना शहर और इसका दिलचस्प इतिहास है। बक्सर का इतिहास रामायण की अवधि से पहले का है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, ऋषि विश्वामित्र जो भगवान राम के पारिवारिक गुरु थे, वह राक्षसों से परेशान थे। इसी स्थान पर भगवान राम ने प्रसिद्ध राक्षसी ताड़का का वध किया था। इसके अलावा भगवान राम और उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने बक्सर में अपनी शिक्षाएं लीं। यह भी कहा गया है कि अहिल्या, जो गौतम ऋषि की पत्नी थी, भगवान राम के चरणों के एक मात्र स्पर्श से मुक्ति प्राप्त कर अपने मानव शरीर को वापस पत्थर से प्राप्त किया। मुगल काल के दौरान हुमायूं और शेरशाह के बीच ऐतिहासिक लड़ाई इसी स्थान पर लड़ी गई। सर हिटर मुनरो के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने 23 मार्च 1764 को बक्सर शहर से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कतकौली के मैदान में मीर कासिम, शुजा-उद-दौलह और शाह आलम-द्वितीय की मुस्लिम सेना को हराया। कतकौली में अंग्रेजों द्वारा निर्मित पत्थर का स्मारक आज भी लड़ाई के प्रतीक के रूप में कायम है।

खैर जो भी हो, हम वापस अपनी रेल यात्रा पर आते हैं। संघमित्रा एक्सप्रेस के सेकेंड एसी कोच में मेरी निचली बर्थ रिजर्व थी। नीचे की सीट आरामदायक होती है यह सोचकर मैं बहुत खुश था। पर जैसा सोचते है वैसा हमेशा नहीं होता। हमारे यहाँ कहा जाता है- ‘ईश्वर आपकी यात्रा सफल करें’। आप पूछ सकते हैं कि इस छोटी-सी रोजमर्रा की बात में मैं ईश्वर को क्यों घसीट रहा हूँ? “भारतीय रेल के बारे में कहा जाता है, जो चढ़ गया उसकी जगह, जो बैठ गया उसकी सीट, जो लेट गया उसकी बर्थ”। भारतीय रेलवें तो

साफ कहती हैं– जिसमें दम, उसके हैं हम। पर, जरा सोचिए कि भारतीय परिवेश में रेल यात्रा में ईश्वर के सिवा आपका है कौन? बस आत्मबल चाहिए। मित्रों, ट्रेन हो, लोगों का जमावड़ा हो और कोई मज़ेदार क़िस्सा न हो ऐसा संभव नहीं।

रात के 10 बजे आधी नींद में आंखें मसलता हुआ मैं अपनी सीट तक जा पहुंचा। वहां पाया कि एक परिवार अपने बच्चों के साथ पहले से उस पर विराजमान थे। तत्काल मेरे मस्तिष्क में निराशाओं के बदरा छा गए। पहले तो विचार आया कि चलो इनको बैठे रहने दो। लेकिन फिर दूसरे ही पल ख्याल आया कि यदि इनकी जगह मैं होता तो शायद ही उन्हें मुझ पर रहम आता और हो सकता था कि वो मुझे आरक्षण की विधि भी समझा देते। मैंने भी सोचा कि सशक्तिकरण का हितैषी होने का परिचय दूं और इन्हें खड़े रहकर शक्ति प्रदर्शन का मौक़ा दे ही दूं। मैंने अतिसंकोच से बताया कि यह सीट आरक्षित है और जैसे ही मैं अपनी सीट पर बैठा और सामने देखा तो सारे लोग मुझे एकटक देख रहे थे, देख क्या घूर रहे थे। जैसे मैंने बहुत ही घृणित कार्य कर दिया है और शायद वे मेरे बारे में सोच रहे होंगे कि इस बुद्धिहीन मानव को नरक में भी स्थान नहीं मिलेगा। मैं स्वयं को ठीक तरह से स्थापित करने की जद्दोजहद कर ही रहा था कि उनके अनुरोध को अस्वीकार न कर सका और अपनी निचली सीट उनको देकर ऊपर वाले बर्थ पर चला गया।

ख़ैर, अभी तो सफ़र शुरू ही हुआ था। सफर बहुत लंबा था पूरे 50 घंटे का। रात तो कैसे भी कट गई पता न चला लेकिन ट्रेन में दिन काटना किसी चुनौती से कम नहीं होता। मेरे सामने वाली बर्थ पर एक परिवार अपना कब्ज़ा जमाए हुए थे। ये सज्जन सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करते थे। कोरोना काल में घर से काम (work from home) का लुफ्त उड़ाया और दो साल बाद अपने घर से बेंगलूरु जा रहे थे और उन्होंने पूरा सामान ट्रेन में लोड कर लिया था। बर्थ के नीचे और बर्थ के ऊपर भी। शायद सामान भेजने का किराया बचाना चाहते थे। मेरी दान की हुई सीट पर एक परिवार अपने बीवी और बच्चों के साथ कब्ज़ा जमाये बैठा था। बैठने की जगह न होने की वजह से मुझे ऊपर वाली बर्थ पर पूरी यात्रा बितानी पड़ी। साइड वाली बर्थ पर एक विद्वान बैठे थे जो पेशे से रेलगाड़ी के ड्राईवर थे और चेन्नई में कार्यरत थे। सुबह के नाश्ते के बाद विद्वान महोदय एक बार ट्रेन की तरह की मानो स्टार्ट हो गए और चेन्नई कब पहुंचे पता ही नहीं चला। जनाब ने फिल्मी स्टाईल में अपने बचपन से लेकर अब तक का अपना किस्सा बेबाकी से सुनाया। उनके पास हर समस्या का हल था। नौकरशाह, मंत्री और मुख्यमंत्री तक उनकी जान पहचान थी। उनके पास ट्रेन के अलावा एक रॉयल एनफील्ड बुलेट 350 मोटर बाइक थी इत्यादि...। विद्वान महोदय के पास माननीय प्रधानमंत्री जी के लिए भी बहुत से सुझाव थे कि देश को कैसा चलाना चाहिए और किस तरह की विदेश नीति और देश को आगे लेकर जाएगी इत्यादि..।

कुछ भी कहा जाय, रेल यात्रा बहुत ही मनोरंजक होती है और हरेक के पास रेल यात्रा से जुड़ा एक न एक किस्सा जरूर होता है । ट्रेन में एक ना एक सज्जन मिल ही जाते हैं जिनकी बदौलत सफर अच्छा कट जाता है। खास कर के उ.प. और बिहार जानी वाली ट्रेनों में। अगर आप साउथ की ट्रेनों में यात्रा कर रहे है तो आप की यात्रा भगवान भरोसे है क्योंकि आप को ऐसे सज्जन नहीं मिलेंगे जो आपकी यात्रा को मनोरंजक बना दे। इसलिए कहा जाता है कि भारतीय रेलें कहीं न कहीं हमारे मन को छूती है। वह मनुष्य को मनुष्य के करीब लाती है। एक ऊँघता हुआ यात्री दूसरे ऊंघते हुए यात्री के कंधे पर टिकने लगता है । बताइये ऐसी

निकटता भारतीय रेलों के अतिरिक्त कहां देखने को मिलेगी? आधी रात को ऊपर की बर्थ पर लेटा यात्री नीचे की बर्थ पर लेटे यात्री से पूछता है– यह कौन सा स्टेशन है? तबियत होती है कि कहूं– अबे चुपचाप रहो, क्यों डिस्टर्ब करता है? मगर नहीं, वह भारतीय रेल का यात्री है और भारतीय भूमि पर यात्रा कर रहा है। वह जानना चाहता है कि इस समय एक भारतीय रेल ने कहां तक प्रगति कर ली है? भारतीय रेलें चिंतन के विकास में बड़ा योगदान देती है। विचारों के अतिरिक्त वहाँ कुछ डूबने को होता भी नहीं।

मनुष्य बड़ा ही विचित्र प्राणी , षड्यंत्रों से भरी उसकी कहानी।

ऊपर से कुछ, भीतर कुछ होता है, कहता कुछ, कुछ और ही करता है।

गौरी सेन, आशुलिपिक
आर.सी.एम.ए (लखनऊ)

कुछ तो लोग कहेंगे

कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित एक छोटे-से कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों की आपसी छेड़छाड़ और हाई टी का लुफ़्त उठाते हुए आज सभी के चेहरे ताज़े फूल से खिले हुए थे। चेहरों पर बिखरी ताज़गी के दो-दो ठोस कारण भी मौजूद थे। एक तो आज नये साल का पहला दिन था और दूसरे आज के दिन को केंद्र सरकार के इस संगठन के स्थापना दिवस के रूप में भी जाना जाता है। कुछ ही देर में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और लखनऊ के इस छोटे-से कार्यालय के समस्त अधिकारी और कर्मचारी आपस में बातचीत करते हुए अपने-अपने कमरें की ओर चल दिए।

आस्था भी कॉन्फ्रेंस हॉल के पिछले दरवाज़े से अपने कमरे का रुख करते हुए चैन की सांस ली। पहले वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संबोधन फिर क्रमशः निदेशक और अन्य अधिकारियों के संक्षिप्त भाषणों से वह कुछ ऊब-सी गई थी। अपनी कुर्सी खींचकर बैठने ही वाली थी कि उसकी नज़र अपने कमरे की ओर ही आते हुए प्रशासनिक अधिकारी की ओर गई।

"आस्थाजी! अरविंद सिंह के घर पर फ़ोन करके ज़रा इन्फ़ॉर्म कर दीजिये कि उनके जी.पी.एफ़ और ग्रैच्युटी के पैसे आ चुके हैं। जब भी संभव हो आकर चेक रिसीव कर लें।" प्रशासनिक अधिकारी ने कहा और फिर हल्की-सी हंसी के साथ बोले, "भई, आज का दिन तो अरविंद के परिवार वालों के लिए भी बड़ा शुभ है!"

प्रशासनिक अधिकारी के जाते ही पहले-पहल तो आस्था यंत्रवत उनके आदेश का पालन करने की कोशिश करती रही। परंतु जब बार-बार डायल करने पर भी नंबर नॉट रीचेबल ही रहा तो उसने सोचा कि अरविंद जी की सेवा पुस्तिका भी तो पेंशन ऑफ़िस भेजने के लिए तैयार करनी है। क्यों न जल्द-से-जल्द इस काम को भी निबटाया जाए। उसने अल्मारी से अरविंद की सेवा-पुस्तिका निकाली। सेवा-पुस्तिका क्या थी, वह तो जैसे अरविंद जी की जीवनी ही थी। अरविंद जी की तमाम यादों में घिरी आस्था को लगा कि सेवा-पुस्तिका का एक-एक अक्षर मुखर हो उठा है और स्वयं अरविंद जी की आवाज़ ही अपना संपूर्ण जीवन-वृत्त बयां कर रही है।

"अरे, जानती हो आस्था बिटिया! 20 बरस के थे, जब हम इस कार्यालय में चपरासी भर्ती होकर आये थे। अब तो पूरे 36 साल हो गये। इस बीच क्या-क्या नहीं देखा हमने! शादी हुई, चार बच्चे हुए, अरे, छः हुए थे। दो जुड़वा बच्चे सतमासे थे, जन्म होने के दो दिन के अंदर ही चल बसे। आठ साल हुए हमारे माता-पिता भी नहीं रहे। अब तो एक लड़के और एक लड़की की शादी भी कर दी हमने। एक लड़की की शादी की तैयारी चल ही रही है। बस छोटे वाले लड़के की कहीं नौकरी पक्की हो जाए तो क्या कहना। ईश्वर चाहेगा तो सब निपट जायेगा।"

इन्हीं बातों को कितनी ही बार अरविंद जी आस्था के सामने दोहरा चुके थे। कभी-कभी तो वह कुछ खीझ भी उठती। पर आज उनकी स्मृति में डूबी आस्था की आंखों की गहरी नीली झील में तैरते कुछ मोती उसके गालों तक ढुलक आये थे। अगले ही पल उसके होठों पर हल्की-सी मुस्कान बिखर आयी। उसने तुरंत अपना रुमाल निकाला और चेहरा साफ़ करते हुए सोचने लगी कि यह सरकारी ऑफ़िस है, कोई देख लेगा तो...!

मगर न जाने क्यों आज रह-रहकर अरविंद जी के व्यक्तित्व का हर पहलू आस्था को याद आता ही रहा। आज काम में उसका जी किसी तरह भी न लग सका। कभी उसे शराब के नशे में धुत्त अरविंद जी याद आये, जो कई-कई दिनों तक ऑफ़िस से नदारद रहा करते तो कभी परोपकारी अरविंद जी, जो अपनी

बीमारी के बावज़ूद भी चिलचिलाती ठंड में सुबह ठीक आठ बजे पहुंचकर महिलाओं की ऑफ़िस ओपनिंग ड्यूटी पूरी करते रहे। कभी पान की पीक थूक-थूककर ऑफ़िस का डस्टबिन गंदा करने और नाली जाम कर देने वाले अरविंद जी तो कभी अपने बातूनी अंदाज़ के मायाजाल में सबको उलझाने वाले या कभी हंसा-हंसाकर लोटपोट कर देने वाले अरविंद जी याद आते रहे।

पान की पीक का वह किस्सा तो बेहद हास्यास्पद होने के साथ कुछ शर्मिंदगी भरा भी था, जब एक दिन लंच के समय अरविंद जी पान मुंह में रखे हुए कुर्सी पर आराम फ़रमाने के अंदाज़ में बैठे थे। कुछ ही देर में गहरी नींद के झोकों से वह झूमने लगे और सबने लंच करके लौटने पर पाया कि पान की पीक उनके गालों से बहती हुई उनकी सफ़ेद शर्ट को लाल बनाने पर आमादा थी।

सात साल पहले जब आस्था ने इस ऑफ़िस में पर्सनल असिस्टेंट के तौर पर जॉइन किया था तो पहले ही दिन से अरविंद जी ने उसकी खूब मदद की थी और उसे हमेशा अपनी बेटी की तरह ही माना था। पर दुनिया की बातों से बेखबर और अपनी मस्ती में चूर अरविंद जी के बरताव में अपने जाने के कुछ रोज़ पहले से संजीदगी ज़ाहिर होने लगी थी। जान पड़ता था कि कोई बोझ या दबाव उन्हें भीतर से खोखला बनाता जा रहा है। शायद उसे ही वे डर का नाम देते रहे।

"बिटिया! वेलफ़ेयर सेंटर बुक करने के लिए एक चिट्ठी बना दो ज़रा। दरअसल, हमारी छोटी बिटिया की शादी पक्की हो गई है"। अपने हाथ की बनाई हुई स्पेशल कॉफ़ी का कप थमाते हुए अरविंद जी ने आग्रह किया था। उस दिन उनके पांव जैसे ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे।

"अच्छा, कहां? अरेंज मैरेज है या...?" अनायास ही पूछ बैठी थी आस्था, फिर प्रश्न अधूरा छोड़कर सोचने लगी कि कैसा बेतुका सवाल पूछ बैठी।

"हां-हां, अपनी ही बिरादरी का बड़ा ऊंचा घरबार है। दूसरी जात-बिरादरी के चक्कर से तो हमें बहुत डर लगता है।"

अरविंद जी ने सगर्व जवाब दिया और जवाब तो अपेक्षित ही था। पर दूसरे ही दिन वे ऑफ़िस के कर्मचारी नवीन यादव की खुशामद करते दिखाई दिए। जल्द ही पता चला कि इस बार भी अरविंद जी उस व्यक्ति से रुपये उधार लेने के प्रयास में सफल हो गए हैं।

"पर अरविंद जी! आप तो जानते हैं न कि उनका कभी न खत्म होने वाला ब्याज आपको..."

आस्था की बात पूरी होने से पहले ही अरविंद जी अपनी सफ़ाई में बोल पड़े, "जानता हूं बिटिया! पर दामाद जी को जो फ़ोर व्हीलर पसंद है, वह छः लाख से कुछ ऊपर की बैठेगी। अब हमारी बिटिया वहां खुश रहे और क्या चाहिए हमें!"

सचमुच ही नवीन यादव मुंशी प्रेमचंद के ज़माने के सूदखोरों को भी मात देने वाला पक्का और बेहद शातिर सूदखोर था। अरविंद जी तो पहले से ही उसके रचे ब्याज दरों के चक्रव्यूह में बुरी तरह से फ़ंसे हुए थे और करते भी क्या, अपनी बड़ी बेटी को हर साल सावन के बाद विदा करने के लिए उन्हें जो लम्बा तामझाम करना पड़ता, उसके लिए वे चतुर्थ श्रेणी के सरकारी कर्मचारी होकर इतना रुपया भला कैसे जुटा सकते थे!

"अभी पिछले महीने ही तो आपने जी.पी.एफ़ से रुपये निकाले थे और अब बैंक से पर्सनल लोन लेने की बात कर रहे हैं। पर्सनल लोन की महंगी दरों के चक्कर में क्यों पड़ना चाहते हैं?" एक रोज़ उन्हें ज़रा डपटते हुए आस्था ने सवाल किया था।

"बिटिया! समझती नहीं हो, अभी राखी के बाद दिव्या ससुराल जायेगी। उसकी मां कह रही है कि दामाद और बेटी का एक-एक गहना बनवाना होगा। इसके अलावा घर भर के कपड़े फल, मिठाइयां, मेवे वगैरह तो हमारे यहां हर तीज-त्योहार पर भेजने ही पड़ते हैं। मान-सम्मान की बात है। डर लगता है भाई,

कहीं किसी को बुरा लग गया तो सुनना-सहना तो हमारी बेचारी दिव्या को ही पड़ेगा।" जवाब में अपनी ऊंची बिरादरी का बखान करते हुए अरविंद जी ने यह चिंता भी ज़ाहिर की थी।

अरविंद जी की इन बातों को सुनकर आस्था अक्सर सोचा करती कि इन अंतहीन रूढ़ियों और परंपराओं से क्या हमारा समाज कभी मुक्ति पा सकेगा? पर अगले ही पल मन प्रतिवाद कर उठता कि यहीं परम्पराएं तो हमारे भारतीय समाज और संस्कृति की पहचान, विशेषता और गौरव के रूप में जानी जाती हैं। पर उसका मन इस तर्क मात्र से ही संतुष्ट न हो पाता। एक बार फिर असंख्य विचारों का बवंडर उसके मन-मस्तिष्क में कोलाहल कर उठता, यही विशेषता क्या सैंकड़ों परिवारों के लिए विवशता या विडम्बना नहीं बन जाया करती है? गले की फांस ही तो है, न उगलते ही बनती है और न निगली ही जाती है। बदलते समय को देखते हुए इन्हें कुछ लचीला भी तो बनाया जा सकता है। खैर, गति कितनी ही मंद क्यों न हो, पर समाज में परिवर्तन तो हो ही रहे हैं, मगर ऐसे परिवारों का भला क्या इलाज है, जो किसी परिवर्तन से कोई सरोकार नहीं रखते, बल्कि इन्हें नई पीढ़ी की दकियानूसी सोच करार देकर नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

स्वयं अरविंद जी ही इस बात को स्वीकारते हैं कि अगर उनके पिताजी ने इतनी ज़मीन-जायदाद न रख छोड़ी होती तो वह अकेली इस नौकरी के सहारे भला क्या-क्या कर सकते थे। पर पैतृक संपत्ति पर अकेले उनका अधिकार तो था नहीं, उसमें भी तो छः-छः भाइयों की हिस्सेदारी बनती थी। यही वजह थी कि ऐसे अवसरों पर एकमुश्त रकम जुटाने के लिए उन्हें ओवर ड्राफ़्ट सैलरी या पर्सनल लोन का सहारा लेना पड़ता या फिर वे अपने जी.पी.एफ़ की सुध लेते। यहां तक कि कभी-कभी तो ऐसे हालात बन जाते कि उन्हें अपने संगी-साथियों या ऑफ़िस वालों की खैर-खबर लेने उनके घर तक जाना पड़ता और जब इन सब सहारों से नाकामी हाथ लगती तो अंतिम विकल्प के रूप में महाजनों के सर्वश्रेष्ठ वंशज श्री नवीन यादव तो थे ही। बेचारे यादव साहब को हर चौथे दिन अरविंद जी से तकाज़ा करने आना पड़ता। लिखा-पढ़ी भी खूब होती। पर अरविंद जी की अल्प बुद्धि में यादव जी की ब्याज दरों का हिसाब-किताब किसी भी तरह समाता ही नहीं था।

पिछले सात सालों से लेनदेन का यही अटूट सिलसिला देखती आ रही थी आस्था और मन-ही-मन अरविंद जी के जज़्बे को सलाम करती थी। पर पिछले कुछ समय से ऐसा लगने लगा था कि वे इस जीवन संग्राम से थकने लगे हैं।

एक लंबे अर्से से शिर्डी जाकर साईं बाबा के दर्शन करने की उनकी बड़ी इच्छा थी। खैर, सब कुछ दरकिनार कर इस बार उन्होंने एल.टी.सी के लिए आवेदन किया और उत्साहपूर्वक परिवार समेत साईं मंदिर के दर्शन कर लौट आए। पर उनका लखनऊ वापस आना था कि सहसा शुगर के पुराने मर्ज़ और अस्थमा के अटैक ने एक साथ उनके शरीर पर हमला कर दिया। ऐसा पहली बार नहीं हुआ था, पर इस बार डॉक्टर ने बताया कि उनके दोनों फ़ेफ़ड़ों में पानी भर गया है। जो भी हो लगभग 13 दिनों तक आई.सी.यू में जीवन और मृत्यु के बीच घोर संघर्ष चलता रहा। लेकिन इस बार तो जिजीविषा ने जैसे पहले ही अपनी हार स्वीकार कर ली थी और इसलिए अरविंद जी ने बेझिझक संसार के माया-मोह को अलविदा कह दिया।

आस्था इस गहरी सोच में डूबी थी कि उनकी मृत्यु के एक साल बाद आज कहीं जाकर उनकी ग्रैच्युटी और जी.पी.एफ़ की शेष रकम आ सकी है। अभी उनकी पत्नी की पेंशन शुरू होने में न जाने और कितना वक्त लगेगा। परिवार की बुनियादी ज़रूरतें पूरी करने के लिए भी अरविंद जी की स्वाभिमानिनी पत्नी को अपने बड़े बेटे या सगे-संबंधियों की मदद का ही आसरा होगा।

तभी अचानक आस्था के सामने रखे लैंडलाइन फ़ोन की घंटी के बज उठने से एकाएक वह चौंक पड़ी। फिर स्वयं को संयत कर जब उसने फ़ोन रिसीव किया तो दूसरी तरफ़ से परेशानी में डूबी विमला देवी का चिरपरिचित स्वर सुनाई पड़ा। आस्था ने झटपट उन्हें वह खुशखबरी सुना डाली, जिसके लिए आज सुबह से वह कई बार उन्हें फ़ोन लगाने का प्रयास कर रही थी।

खबर की प्रतिक्रिया स्वरूप विमला देवी अपने एक साल के वैधव्य जीवन में आज शायद पहली बार अपनी तार-तार बिखरी आवाज़ को एकबारगी ही समेटती हुई चहक उठीं, “ये तो आपने बहुत अच्छी खबर सुनाई। हम आज ही आ जायेंगे। असल में दिव्या और साधना बिटिया अपने चचेरे भाई की शादी में आई हुई थीं। डेढ़ महीने से हमारे पास ही हैं। अभी अगले हफ़्ते ही इन दोनों को विदा करना है। बहुत डर लगता है भाई, लोग भला क्या कहेंगे! अब इनके पापा नहीं रहे तो...। अरे, देखिये न अपनी बातों में हम तो भूल ही गए, नया साल मुबारक हो मैडम!”

बी .के वार्ष्णेय, तकनीकी अधिकारी 'सी'
आर.सी.एम.ए (प्रक्षेपास्त्र), हैदराबाद

अस्ट्रॉलजी एवं राशिफल

अधिकतर लोगो के लिए राशिफल और अस्ट्रॉलजी सुने हुए शब्द हो सकते हैं जो खगोल शास्त्र से संबंधित है और जिसके ज़रिए सांसारिक घटनाओं की भविष्यवाणी की जाती है। यदि आप नहीं जानते कि **अस्ट्रॉलजी क्या है** तो यहां इसके बारे में विस्तार से जानिए ।

अस्ट्रॉलजी

भारत में एक कुशल उच्च शिक्षित अस्ट्रॉलजर का मिलना कोई असामान्य बात नहीं है। यहां बहुत से अस्ट्रॉलजर लोगों का भविष्य बताने का व्यवसाय करते हैं। भारत में बहुत से लोगों को अपना भविष्य जानने में दिलचस्पी रहती है और वे किसी अस्ट्रॉलजर से सलाह ज़रूर लेते हैं। अस्ट्रॉलजर अपने अस्ट्रॉलजी के ज्ञान का इस्तेमाल करके लोगों के भविष्य में होने वाली घटनाओ का विवरण उन्हें देते हैं।

अस्ट्रॉलजी का मतलब क्या है?

अस्ट्रॉलजी (Astrology) का हिन्दी में मतलब '**ज्योतिष**' होता है जो एक प्रकार की साइंस या विद्या होती है। ज्योतिष विद्या एक पारंपरिक हिंदू प्रणाली है, जिसे भारतीय हिंदू ज्योतिष और वैदिक ज्योतिष के रूप में भी जाना जाता है।

अस्ट्रॉलजी क्या है?

ज्योतिष विद्या को अँग्रेज़ी में अस्ट्रॉलजी कहा जाता है जिसमें मानवीय मामलों और स्थलीय घटनाओं पर तारों और ग्रहों की स्थिति और पहलुओं द्वारा अनुमानित प्रभावों का अनुमान लगाया जाता है। सौर ग्रहों और तारों की स्थितियों व गतियों का मानव जीवन और घटनाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन या पृथ्वी के संबंध में ग्रहों का अध्ययन और मानव जीवन पर उनके प्रभाव का अध्ययन करना ज्योतिष (अस्ट्रॉलजी) के अंतर्गत आता है।

ज्योतिष में यह माना जाता है कि ब्रह्मांड में मौजूद ग्रहों, सूर्य, चंद्रमा और सितारों की गति का लोगों के जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ सकता है। ज्योतिष में दो प्रमुख पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है- एक हमारी जन्म-दिनांक, स्थान एवं समय और दूसरा हमारी कुंडली पर ग्रहों और सितारों का प्रभाव।

ज्योतिष विद्या के इस्तेमाल से ज्योतिषियों द्वारा किए गए दावों को व्यापक रूप से अवैज्ञानिक के रूप में ही देखा जाता है जबकि ज्योतिष और खगोल विज्ञान दोनों ही तारों और ग्रहों पर आधारित होती हैं।

ज्योतिष की व्याख्याएं अक्सर किसी के भविष्य का आश्वासन देती हैं और हमें अपने मामलों को हल करने और सुधार करने का तरीका दिखाती हैं। ज्योतिष का अक्सर यह दावा होता है कि जीवन में कुछ भी संयोग मात्र नहीं है बल्कि हमारे साथ जो कुछ भी होता है, वह किसी खास कारण से होता है।

ज्योतिष हमें इनके कुछ अच्छे उत्तर प्रदान कर सकता है कि ये चीजें हमारे साथ क्यों होती हैं और यह हमें आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन करती है। इस तरह ज्योतिष वास्तव में लोगों को खुद को और अपने आसपास की दुनिया को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है।

"1999 के एक अध्ययन के अनुसार, 'कुंडली' और 'ज्योतिष' शब्द इंटरनेट पर दो सबसे अधिक खोजे जाने वाले विषय थे।" ज्योतिष एक कला और विज्ञान दोनों होती है। ज्योतिष एक कला इसलिए है क्योंकि विभिन्न पहलुओं को एक साथ लाने और व्यक्ति के चरित्र लक्षणों का एक विचार तैयार करने के लिए व्याख्या की आवश्यकता होती है। ज्योतिष के गणितीय भाग के हिसाब से यह एक विज्ञान है क्योंकि इसके लिए खगोल विज्ञान और गणित की समझ की आवश्यकता होती है।

ज्यादातर लोग जो ज्योतिषियों के पास जाते हैं और अपनी कुंडली पढ़वाते उनमें कुछ हद तक उत्साह की तरह तृप्ति और संतुष्टि की अनुभूति होती है। इसका मतलब यह नहीं है कि ज्योतिषियों ने उनकी कुंडली तिथियों के आधार पर व्यक्तियों के भविष्य या वर्तमान की सटीक भविष्यवाणी की है लेकिन इसका मतलब है कि कुंडली का होना वास्तव में एक बहुत ही संतोषजनक अनुभव हो सकता है।

जीवन में ज्योतिष का क्या महत्व है?

ज्योतिष वास्तव में एक जीवन रक्षक हो सकता है क्योंकि यह आपको भविष्य की बाधाओं और समस्याओं के बारे में पहले से बता देता है। यह आप पर निर्भर करता है कि आप कुंडली पढ़ने में बताई गई सलाह और सावधानियों पर विश्वास करना चाहते हैं या बिना ज्यादा कुछ किए ही खुद को दर्द से बचाना चाहते हैं।

कुछ लोग ज्योतिष में विश्वास करते हैं क्योंकि उनसे पहले अन्य लोगों ने इसे एक बुनियादी मानव स्वभाव के रूप में विश्वास किया था लेकिन ज्योतिष को जितना अधिक समझा गया, चीजें उतनी ही स्पष्ट होती गईं।

हम राशियों (Zodiac Sign) को अपने जीवन के लगभग सभी पहलुओं से जोड़ सकते हैं और हम देखेंगे कि वे वास्तव में व्यावहारिक और सही हैं। हमारी कुंडली अद्वितीय है और वे हमारी ताकत, कमजोरियों के साथ-साथ हमारे प्राकृतिक गुणों को खोजने और प्रकट करने में हमारी सहायता कर सकती हैं।

ज्योतिष हमें यह पता लगाने में भी मदद कर सकता है कि कौन से रिश्तें हमारे संगत हैं और कौन से नहीं। अपनी प्रेम क्षमता के बारे में जानकर आप अवसरों का सर्वोत्तम उपयोग कर सकते हैं और एक सुखी प्रेम या वैवाहिक जीवन के लिए उचित उपाय कर सकते हैं। ज्योतिष (Astrology) हमें एक अच्छा और सफल जीवन बनाने के लिए सही करियर और शिक्षा का रास्ता चुनने में मदद कर सकता है।

एक ज्योतिष विधि एस्ट्रोकार्टोग्राफी भौगोलिक स्थिति में अंतर के माध्यम से बदलती जीवन स्थितियों की पहचान करने में सक्षम होती है।

क्या अस्ट्रॉलजी सच होती है?

ज्योतिष सितारों की स्थिति को समझने पर आधारित होती है जो अपने आप में एक वैज्ञानिक खोज की तरह लगता है लेकिन अभी तक कोई ऐसी विज्ञान नहीं है जो इस बात का समर्थन करती हो कि

ज्योतिष हमारे व्यक्तित्व और हमारे जीवन को प्रभावित करता है या नहीं। संक्षिप्त में, विज्ञान की दृष्टि से कहा जाए तो नहीं, अस्ट्रॉलजी या ज्योतिष सच नहीं है।

ज़ोडिक साइन मीनिंग

ज़ोडिक का मतलब '**राशि**' या **राशि चक्र**' है और साइन का मतलब '**चिन्ह** या **संकेत**' हैं। इस प्रकार ज़ोडिक साइन (Zodiac Sign) का हिन्दी में मतलब "**राशि-चक्र चिन्ह**" होता है जिन्हें आमतौर पर 'राशियां' कहा जाता है जिसमें 12 संकेत होते हैं और ये ज्योतिष से संबंधित होते हैं।

ज़ोडिक साइन क्या है?

ज़ोडिक साइन 'ज्योतिषीय संकेत' होते हैं। पश्चिमी ज्योतिष में ये बारह (30 डिग्री) क्षेत्र हैं जो सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की 360 डिग्री की कक्षा बनाते हैं। वसंत के पहले दिन से संकेत मिलते हैं, जिन्हें मेष राशि का पहला बिंदु कहा जाता है जो कि वर्णाल विषुव है।

ज्योतिषीय संकेत 12 राशियों के रूप में होते हैं और प्रत्येक राशि की अपनी ताकत और कमजोरियां होती हैं। इसके अपने विशिष्ट लक्षण और जीवन तथा लोगों के प्रति दृष्टिकोण होते हैं।

इन 12 राशियों में से प्रत्येक चार तत्वों जैसे वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी में से एक है। ये तत्व एक आवश्यक प्रकार की ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये चार तत्व ज्योतिषीय संकेतों से जुड़े अद्वितीय व्यक्तित्व प्रकारों का वर्णन करने में मदद करते हैं और ये किसी के चरित्र लक्षणों, भावनाओं, व्यवहार व सोच पर गहरा प्रभाव डालते हैं। राशियाँ चार तत्वों से संबंधित हैं। जो इस प्रकार हैः-

- अग्नि – मेष, सिंह, धनु राशि
- पृथ्वी – वृष, कन्या, मकर राशि
- वायु – मिथुन, तुला, कुंभ राशि
- जल – कर्क, वृश्चिक, मीन राशि

ज्योतिष के अनुसार किसी का नाम उसकी कुंडली के हिसाब से होना चाहिए जो अक्सर नहीं होता है और हर किसी के नाम के हिसाब से राशि अलग-अलग होती है जिनका हर दिन का परिणाम अलग होता है जिसे 'राशिफल' के नाम से जाना जाता है।

डी अरुल कुमरेसन, वै.एफ
आर.सी.एम.ए (हेलिकॉप्टर्स)

समय

एक बार की बात है। चार दोस्त एक स्कूल में पढ़ते थे। उनके नाम- दिनेश, संतोष, मनीष और प्रवीण था। वे हर साल परीक्षा समाप्त होने के बाद स्कूल के बाहर एक होटल में एकसाथ खाना खाते थे। इस तरह जब वे दसवीं की परीक्षा के बाद एक साथ होटल में मिले अब उनका इस स्कूल में अंतिम साल था तो वे मिलकर बात किये कि अब हम लोग 35 साल बाद वापस इसी जगह मिलेंगे और इसी होटल में खाना खाएंगे। ऐसी बात करके वे हँसी मजाक करते रहे कि किसी के बाल झड़ जायेंगे तो कोई मोटा हो जायेगा । इसके बाद विदाई लेने से पहले वे बात किए कि हम लोग बहुत मेहनत करेंगे जिससे जब हम मिले तो एक सफल इंसान बन जाये और जो सबसे बाद में आयेगा होटल में बिल के पैसे वही भरेगा। ऐसा बोल कर सभी हँसने लगे। यह सब होटल में खाना देने वाला (वेटर) मुरली उनकी बातें सुन रहा था और बोला अगर मैं भी यहाँ रहा तो आपका इंतजार करुंगा। यह सुनकर सब उसको बक्शिश दे कर चारों अलग-अलग दिशा में चले गए।

साल दर साल होने के बाद समय निकल गया और वहीं तारीख आ गई जिसमें उन चारों ने मिलने की बात कही थी। समय के अनुसार उस शहर का भी बहुत विकास हो गया। आबादी बढ़ गई। बड़े-बड़े मॉल खुल गए। बड़े होटल भी खुल गए और वह होटल जिसमें वे मिलते थे, वह भी अब सात सितारा होटल हो गया और अब मुरली उस होटल का मालिक बन गया।

35 साल के बाद एक शानदार कार वहाँ आई। उसमें से दिनेश बाहर निकलता है। मुरली दिनेश को पहचान गया और उसका स्वागत किया। मुरली दिनेश से बोलता है- प्रवीण सर ने पहले से होटल में बुकिंग कर दी है। दिनेश हँस कर मुरली से बोलता है- चलो मैं पहले आया हूँ। अब मुझे बिल का भुगतान नहीं करना पड़ेगा। दिनेश अब 10 आलीशान सोने और जेवरात की दूकान का मालिक बन चुका है। अब एक घंटे बाद संतोष भी वहाँ आ गया। संतोष एक बहुत बड़ा ठेकेदार है जिसने शहर में बहुत बड़ी-बड़ी बिल्डिंग बनवाई है। कुछ ही देर में वहाँ मनीष भी आ गया। अब तीनों आपस में मिलकर बहुत खुश हुए और बहुत सारी बचपन से लेकर अभी तक की बातें करने लगे लेकिन उन सब की नजरें होटल के गेट पर टकटकी लगाए प्रवीण का इंतजार कर रही थी। बहुत देर तक ऐसे ही बात होने के बाद प्रवीण का संदेश आया कि उसे थोड़ा समय लग जायेगा। वह किसी जरूरी काम में व्यस्त है। थोड़ा समय हो जाने के बाद एक युवा लड़का वहाँ आता है और उन तीनों से मिलता है। जब वे उसका परिचय पूछते हैं तो वह बोलता है मैं रवि हूँ, प्रवीण का बेटा। मेरे पिता जी हमेशा आप लोगों की और इस दिन की बात किया करते थे। बदनसीबी से वे तीन महीने पहले इस दुनिया से विदा ले लिए। मरने से पहले मुझे इस दिन थोड़ा देर से आप लोगों से मिलने के लिए कहा क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उनकी वजह से आप लोग आज के दिन अपनी बातें न कर पाएं। अगर आप लोगों को यह पता होता तो आप सब दुखी हो जाते। इसलिए मैं देर से आया हूँ। यह सुनकर सब दुखी हो जातें है। दिनेश पूछता है मैंने तुम्हें कहीं देखा है। तब रवि बोलता है- हां देखा होगा मैं इस जिले का कलेक्टर हूँ ।

इसके बाद मुरली बोलता है- मिलने के लिए 35 साल का इंतजार मत करना। हां 35 दिनों बाद मिलते रहना है।

दोस्तों, रिश्तेदारों से हमेशा मिलते रहो। समय का इंतजार मत करो। पता नहीं कब किसका समय आ जाए।

तपन उपाध्याय, एम.टी.एस
सेमिलाक, बेंगलूरु

बहाव के सामने

(लघु कथा)

मैं आज सुबह से ही परेशान हूँ। बिटिया बीमार है। तेज बुखार है। कुछ जुकाम-खांसी भी है। डॉक्टर की दवा का भी कोई असर न हुआ। बुखार ज्यों-का-त्यों है।

मैं बार-बार उसके माथे पर हाथ रखकर देखता हूँ, जल रहा है। फिर उसके हाथों को अपने हाथों में ले लेता हूँ। प्यार करता हूँ। सांत्वना भी देता हूँ- "चिंता की कोई बात नहीं। बहुत जल्दी ठीक हो जाएगी हमारी बिटिया। बुखार तो आता ही रहता है"। मेरे प्यार की गर्माहट से ही वह आँखे खोल देती है। आँखें लाल हैं, लगातार पानी बह रहा है। वह मुस्कुराने की चेष्टा करती है। फिर धीरे से कहती है- "डैडी, जी करता है, बीमार ही रहूँ"।

"क्यों बेटे?"- मैं हैरान होकर पूछता हूँ।

"जब बीमार होती हूँ, तो आप मुझे भी आशू भैया जितना प्यार करते हैं ना"- बिटिया स्पष्ट करती है।

मैं सन्न रह गया। बेटी की अदालत ने मुझे अपराधी घोषित कर दिया था। बेटे-बेटी में मैं कभी कोई अंतर नहीं किया। लेकिन दो वर्ष छोटा होने के कारण बेटे आशू के प्रति कुछ अधिक लगाव होना स्वाभाविक है। निशि ने उसे अपने प्रति भेदभाव समझ लिया था।

मैं उसे कसकर भींच लेता हूँ। मुझे लगता है कि यदि मैंने अपनी पकड़ ढीली कर दी तो उसकी आँखों से उमड़ने वाली जल-धारा मुझे भी बहा ले जाएगी।

प्रशांत कुमार, वै.ई,
आर.सी.एम.ए (जीटीआरई)

मेरा मन मेरा वन

वाल्मिकी राष्ट्रीय उद्यान बिहार का एक मात्र राष्ट्रीय उद्यान है। वाल्मिकी राष्ट्रीय उद्यान एक बाघ अभ्यारण्य है। यह बिहार के पश्चिम चंपारण जिले के वाल्मिकी नगर जंगल में फैला हुआ है। पश्चिम चंपारण जिले का मुख्यालय बेतिया है। चंपारण नाम दो शब्दों "चंपा" और "अरण्य" से लिया गया है जिसका अर्थ है "चंपा के पेड़ों का जंगल"। बेतिया शब्द भी "बेत" से लिया गया है। कभी यहाँ बेत का जंगल हुआ करता था।

जिले का कुल वन क्षेत्रफल लगभग 18% है जो तक़रीबन 900 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें से वाल्मिकी राष्ट्रीय उद्यान का विस्तार लगभग 350 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र है। उत्तर में यह नेपाल के "चितवन राष्ट्रीय उद्यान" से घिरा है जबकि पश्चिम में उत्तर प्रदेश से घिरा है। बिहार सरकार इस वन के 800 हेक्टेअर (8% वन क्षेत्र) जंगल को घास के मैदान में बदल रही है जिससे यह भारत का सबसे बड़ा "घास का मैदान" बन जायेगा। यहाँ लगभग 50 से ज्यादा बाघ, 400-450 भालू, 100 चीता 250-300 इंडियन-बाईसन और 200+ प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं।

यहाँ आप रोड, रेल या हवाई मार्ग से आ सकते हैं। नजदीकी हवाई अड्डा गोरखपुर, कुशीनगर, दरभंगा एवं पटना है और फिर बस या कार के द्वारा यहाँ पंहुचा जा सकता है। ट्रेन के द्वारा सीधे वाल्मीकि नगर स्टेशन जाया जा सकता है।

वाल्मिकी राष्ट्रीय उद्यान काफी बड़ा है इसलिए इसे एक दिन में नहीं घुम सकते हैं। इसके लिए आपको दो दिन की तैयारी के साथ आना होगा। मंगुराहा, वाल्मीकी नगर और गोवार्धना तीन जगह है जहाँ से उद्यान के अंदर जा सकते हैं।
मंगुराहा उद्यान का इस्टर्न एंट्री पॉइंट है जो अतिसुंदर "घास के मैदान" और "वन्य-जीवन" को देखने के लिए प्रसिद्ध है, जिसे हमने अपनी पैदल/सफारी यात्रा के दौरान करीब से अनुभव किया।

हमलोग सपरिवार इस जंगल को घूमने दिसंबर महीने में गए थे। जाड़े में दिन काफी छोटा होता है इसलिए हम सब सुबह-सुबह बेतिया से अपने कार से मंगुराहा के लिए निकल गए थे। रास्ते में हमने "भितिहरवा गाँधी आश्रम" और "रामपुरवा अशोका पिलर" को भी देखा। चंपारण सत्याग्रह के दौरान गाँधीजी भितिहरवा रुके थे। यहाँ पर गाँधीजी से जुड़ी यादों का संग्रहालय है जिसे हर किसी को देखना चाहिए। उसके बाद हम मंगुराहा गेस्ट हाउस पहुंचे। पहले से बुक "जंगल सफारी" जीप हमारा इंतज़ार कर रही थी। खुली जीप से हम सब जंगल के अंदर गए। ड्राईवर ने बताया कि सुबह के समय जानवर दिखाई देते हैं। आपलोग को और जल्दी आना चाहिए था। जैसे-जैसे जीप गहन जंगल के अंदर जा रही थी हम सब भी बहुत रोमांचित हो रहे थे। रास्ते भर ड्राईवर हमें जंगल और जंगली जानवर के किस्से सुनाता हुआ ले जा रहा था। जंगल का रास्ता बिलकुल कच्चा था। मिट्टी, पत्थर और पानी रास्ते का हिस्सा थे। लेकिन ड्राईवर को उस रास्ते पर चलने का अनुभव पक्का था। लगभग बीस किलोमीटर जंगल के अंदर चलने के बाद हमें नदी दिखाई दी। हम सब पहाड़ी नदी जिसमे घुटना भर पानी बह रहा था, के अंदर जाकर उसका आनंद लिए। धूप, शीतल और शुद्ध पहाड़ी हवा और पानी का अनुभव अपने आप में यात्रा को यादगार बना रहा

था। थ्री लेयर "साल वन" का दृश्य नदी से देखने पर आपके मन को रोमांचित कर देता है। जंगल-सफारी के रास्ते में हमने बंदर, मोर, हिरन, भालू, हाथी, संभार और अनेकों प्रकार के पक्षियों को देखा। ड्राईवर ने हमें बाघ के पैरों के निशान दिखाए और बताया बाघ को देखना बहुत मुश्किल होता है। वह जंगल के बहुत अंदर रहता है, जहाँ जाना मना है। वापस आ कर हमने गेस्ट हॉउस के स्वादिष्ट भोजन का लुफ्त उठाया। थोड़ी देर आराम करने के बाद पुनः हमलोग जंगल के दूसरे तरफ निकल गए।

अब हमलोग मंदिर की ओर बढ़ रहे थे। प्राचीन एवं प्रसिद्ध "सोफा-मंदिर" और "सहोदरा-माता का मंदिर" घने जंगल के बीच स्थित है, जहाँ आपको पैदल जाना होता है। मंदिर के प्रांगण की घंटे की आवाज आपको मीलों दूर से ही सुनाई देती है। घने जंगल में यह मंदिर आपके मन और विचारों को अद्भुत शांति देती है। मंदिर से आगे बढ़ने पर सूर्यास्त-पॉइंट है जहाँ सूर्यास्त का मनमोहक नजारा देखने को मिला। हमारे साथ और भी कई पर्यटक सूर्यास्त का इंतज़ार कर रहे थें। सूर्यास्त के बाद जंगल में अँधेरा छाने लगा। हमलोग भी जल्दी से अपने गेस्ट हाउस आ गए। दिन भर के थकान के बाद कब नींद आ गई पता नहीं चला। लेकिन सुबह-सुबह मोर की आवाज ने नींद को तोड़ दिया।

अब हम दूसरे दिन और दूसरे स्थान की सैर के लिए तैयार थे। अब हमारा रास्ता वाल्मिकी नगर जंगल की तरफ मुड़ गया। यह राष्ट्रीय उद्यान का नॉर्थ-वेस्टर्न एंट्री पॉइंट है। इसे पहले भैंसालोटन के नाम से जाना जाता था। यह गंडक नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा है। यह जगह तीन नदियों- नारायणी, पचनाद और सोनहा नदी का संगम है। इसलिए यह "त्रिवेणी" नाम से भी जाना जाता है। यहीं पर बिहार का प्रसिद्ध गंडक बराज है जो नेपाल से आने वाले नदियों के पानी को बिहार में तबाही मचाने से रोकता है। इस क्षेत्र में लगभग 32 प्रकार के रेंगने वाले जीव जंतु पाए जाते हैं जिनमें जहरीले और खतरनाक सांप जैसे कोबरा, पाईथन, कैरत, अजगर एवं घरियाल, छिपकली देखे जाते हैं।

यहाँ का मुख्य आकर्षण "बोट-सफारी" है जिसे करने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं। नदी में ज्यादा पानी होने की वजह से हर मौसम में बोट सफारी करना संभव नहीं हो पाता है। चुंकि दिसंबर का महीना था और हमलोग बोट सफारी कर सकते थे, फटाफट हमलोग जीवन रक्षक जैकेट पहन कर बोट में बैठ गए। बोट सफारी के दौरान पहाड़, नदी और जंगल की नैसर्गिक सुंदरता देखने को मिलती है। लगभग 1 घंटा बोट सफारी करने के बाद हम लोग किनारे पर बने "वाच-टावर" पर सेल्फि लिए और जंगल और नदी के किनारे बसे दूर-दराज इलाकों को देखे। कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक "गोलघर" आता है जिस पर चढ़ कर आप हिमालय के पर्वत श्रृखलाओं का दीदार कर सकते हैं। इतना करने के बाद अब पेट में भूख गुदगुदी कर रही थी। हम सबने नदी के किनारे पर ही बने गेस्ट हाउस के मेस में अद्भुत बिहारी भोजन किया और फिर निकल पड़े अपने अंतिम मंजिल की तरफ।

हर बार मेरा प्रयास यही रहता है कि जहाँ भी जाए, मंदिर जरुर जायें ताकि आप जिंदगी की भागम-भाग से दूर और भगवान के करीब खुद को ज्यादा महसूस कर सके। जब मंदिर घनघोर वाल्मीकी नगर के जंगल में हो तो वहाँ भगवान का दर्शन करने का आनंद अलग है। डर आपको भगवान के और करीब ले जाता है। हम हजारों साल पुराने जटाशंकर मंदिर और नर देवी मंदिर गए। ये मंदिर इतने प्रसिद्ध है कि पहाड़ी रास्ता और पथरीली रास्ता होने के बावजूद भी भक्त यहाँ आने से खुद को रोक नहीं पाते है। मंदिर से बाहर आने के बाद हमने नारायणी नदी को पैदल पार किया क्योंकि यहाँ दिसंबर के महीने में बहुत कम

पानी रहता है। बाद में वाल्मिकी आश्रम पहुंचे। कहा जाता है महर्षि वाल्मिकी के इसी आश्रम में माता सीता ने लव-कुश को जन्म दिया था। मंदिर की सुंदरता और पुरातन अवशेष से बने कुटिया की सुंदरता हृदय को छू लेती है। इस जगह का नाम "वाल्मिकी नगर" भी महर्षि वाल्मिकी के नाम पर पड़ा है। सूर्य ढल रहा था और हमारा दो दिवसीय यात्रा भी समाप्त हो चुका था। हम जल्दी-जल्दी गेस्ट हाउस पहुँच कर अपना सामान समेट कर घर की ओर निकल पड़ें क्योंकि अगले दिन बंगलोर के लिए उड़ान भरना था।

यात्रा के दौरान बिताए पल और घुमे हुए जगह मेरे मन-मस्तिक और हृदय में छप गए थे। विमान से उड़ते हुए हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं को देखने पर हुए यात्री-मन एक बार फिर से अभिभूत हो गया तथा इनकी यादों में खो गया और फिर कब बंगलोर आ गया पता ही नहीं चला।

जब भी मौका मिलता है मैं इस उद्यान का भ्रमण करने से नहीं चूकता। चुंकि प्रकृति को ज्यादा जानने का और नजदीक से अनुभव करने का इससे अच्छा मौका मेरे घर के करीब कहाँ मिलेगा। वाल्मिकी राष्ट्रीय उद्यान का तीसरा द्वार "गोवार्धना" का उल्लेख अभी बाकी है जिसका अनुभव मैं घूमने के बाद जरुर साझा करूँगा।

सुरेश कुमार ज्ञान रंजन करडा
वा.चा.क
सेमिलाक, बेंगलूरु

लाल पोहा

शादी के बाद मैंने देखा ससुर जी ऑफिस जाने से पहले लाल पोहा खाकर जाते हैं। साल बारह महीने वही लाल पोहा, केला और दही सब साथ में मिलाकर खाते हैं। खाते जितना उससे ज्यादा छोड़ कर जाते हैं। रोज वैसे ही टेबल के ऊपर छोड़ कर जाएंगे और सासु माँ को बोलेंगे थाली वापस ले जाने के लिए। सासु माँ आकर वह थाली देख कर बहुत गुस्सा करती है। ये देखो तुम्हारे ससुर जी को जितना ही कम दू ना कहीं आधा छोड़ के ही जाएंगे, इस घर में लक्ष्मी नहीं रहेंगी। हमारे ओड़िया परिवार में खाना फेंकना पाप माना जाता है। इसलिए न चाहते हुए भी सासु माँ सारे पोहे खुद ही खाकर खत्म करती है। ऐसे देखते देखते महीनों बीत गए। ससुर जी बच्चों के जैसा खाना छोड़ते गए। कुछ दिन बीतने के बाद एक दिन मैंने ससुर जी से बात पूछ ही लिया कि आप खाना छोड़कर सासु माँ को क्यों परेशान करते हैं? ससुर जी मुस्कुराते हुए बोले ठीक है आज नहीं छोड़ूंगा नाश्ता और वे सारे पोहे खाकर ऑफिस निकल गये। उनके जाने के बाद सासु माँ थाली ढुंढने के लिए आई। मैंने बताया माँ आपको पता है पिताजी आज सारा पोहा खत्म करके ऑफिस गये हैं। सासु माँ आश्चर्यचकित हो गई। आज सूरज कौन-सी दिशा में उदय हुआ है। मैं उनकी बात सुनकर हँसने लगी। शाम को ससुर जी के ऑफिस से आने के बाद और माँ आज तुम्हारे सासु माँ क्या खायी नाश्ते में? अरे सच में आज सासु माँ कुछ भी नहीं खाई है। ससुर जी मेरी बात समझ गए और बोले तुम्हारी सासु माँ ऐसे ही है। घर के काम में खाना भूल जाती है। पेट की बीमारी निकली है। खाना खाए बिना ये बीमार हुई है। मैं पोहा इसलिए छोड़कर जाता हूँ फेंकने के डर से कम से कम वही बचा हुआ पोहा खा लेती है। ये सुनकर मैं सोफे पर बैठ गई और सोचने लगी कि लाल गुलाब सब लोग देते हैं वेलेंटाइन डे पर लेकिन लाल पोहा देना भी प्यार होता है आज पता चला।

श्रीमती रश्मि वार्ष्णेय
बी.के वार्ष्णेय की पत्नी
आर.सी.एम.ए(प्रक्षेपास्त्र), हैदराबाद

सामाजिक परिवर्तन क्या है? अर्थ, परिभाषा, प्रकार, विशेषताएं एवं कारण

प्रत्येक समाज में दो प्रकार की शक्तियाँ पाई जाती हैं- पहली वे जो समाज में यथास्थिति बनाए रखना चाहती हैं तथा दूसरी वे जो समाज को परिवर्तित करना चाहती हैं। दोनों में सामंजस्य होना समाज में निरंतरता के लिए अनिवार्य है। कई कारणों से सामाजिक परिवर्तन अवश्यंभावी रहा है और है। अठारहवीं एवं उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप के समाजों में हो रहे तीव्र परिवर्तनों के अध्ययन में प्रारंभ से ही समाजशास्त्र में रुचि स्पष्टतः देखी जा सकती है। विद्वानों की कृतियों में परिवर्तन के प्रति रुचि स्पष्ट दिखाई देती है। इतना ही नहीं, उन्नीसवीं शताब्दी में उदविकासवादी (Evolutionary) तथा ऐतिहासिक (Historical) दृष्टिकोणों का विकास परिवर्तन के अध्ययनों के परिणामस्वरूप ही हुआ है।

सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा

परिवर्तन के अभाव में हमारी सामाजिक उपलब्धि, समाजीकरण, सामाजिक सीख तथा सामाजिक नियंत्रण कुछ भी संभव नहीं है। निश्चित और निरंतर परिवर्तन मानव समाज की विशेषता है। सामाजिक परिवर्तन का विरोध होता है क्योंकि समाज में रूढ़िवादी तत्त्व प्राचीनता से ही चिपटे रहना पसंद करते हैं। स्त्री स्वतंत्रता और समान अधिकार की भावना, स्त्रियों की शिक्षा, परदा प्रथा की समाप्ति, स्त्रियों का आत्म-निर्भर होना, दलितों और निम्न जातियों की प्रगति आदि अनेक परिवर्तनों को आज भी समाज के कुछ तत्त्व स्वीकार नहीं कर पाते हैं तथापि इनमें परिवर्तन होता जा रहा है।

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषा

परिवर्तन किसी भी वस्तु, विषय अथवा विचार में समय के अंतराल से उत्पन्न हुई भिन्नता को कहते हैं। परिवर्तन तब और अब की स्थितियों के बीच पैदा हुए अंतर को प्रकट करता है। 'परिवर्तन' एक बहुत विस्तृत अवधारणा है और यह जैविक (Biological), भौतिक (Physical) तथा सामाजिक (Social) तीनों जगत में पाई जाती है। किंतु जब परिवर्तन शब्द के पूर्व 'सामाजिक' शब्द जोड़कर उसे 'सामाजिक परिवर्तन' बना दिया जाता है तो निश्चित ही उसका अर्थ सीमित हो जाता है।

सामाजिक परिवर्तन को हम संपूर्ण परिवर्तन का एक भाग कह सकते हैं क्योंकि भौतिक एवं जैविक जगत में होने वाले परिवर्तनों को सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता है। अत: प्रश्न उठता है कि सामाजिक परिवर्तन क्या है? **सामाजिक परिवर्तन का अर्थ सामाजिक संगठन, समाज की विभिन्न इकाइयों, सामाजिक संबंधों, संस्थाओं इत्यादि में होने वाला परिवर्तन है।** सगंठन का निर्माण संरचना तथा कार्य दोनों से मिलकर होता है। सामाजिक प्रक्रियाओं तथा सामाजिक अंतःक्रियाओं में होने वाले परिवर्तनों को भी सामाजिक परिवर्तन ही कहा जाता है।

समाज में जीवन के स्वीकृत ढंग संस्थागत हो जाते हैं और इन्हीं संस्थागत प्रतिमानों में परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन कहलाता है। यह परिवर्तन किसी भी कारण से पैदा हो सकता है। इस परिवर्तन को

लाने में भौगोलिक दशाओं, संस्कृति, व्यक्तियों की मनोधारणाओं एवं जनसंख्या की संरचना, नवीन आविष्कारों तथा सामाजिक सांस्कृतिक तत्त्वों के प्रसार (Diffusion) जैसे कारणों को महत्वपूर्ण माना गया है। सामाजिक परिवर्तन वह शब्द है जोकि सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक अंतःक्रियाओं या सामाजिक संगठन के किसी भाग में घटित होने वाले हेर-फेर या संशोधन के लिए प्रयोग किया जाता है। समाज में अनेक क्रियाएँ कार्यरत रहती हैं। जैसे- संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, विरोध, सहयोग इत्यादि। विविध सामाजिक क्रियाएँ एवं अंतःक्रियाएँ सामाजिक संबंधों के ही विविध रूपों को हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं।

सामाजिक परिवर्तन समाज से संबंधित है

सामाजिक परिवर्तन का संबंध व्यक्ति विशेष अथवा समूहविशेष से न होकर पूर्ण समाज के जीवन से होता है। यह व्यक्तिवादी नहीं वरन् समष्टिवादी होता है। इसलिए परिवर्तन का प्रभाव सामान्यत: सम्पूर्ण समाज पर पड़ता है।

सामाजिक परिवर्तन सार्वभौमिक है

संसार में कोई भी ऐसा समाज नहीं है जहाँ परिवर्तन न होता रहता हो और जो पूर्णत: स्थिर हो। परिवर्तन प्रति क्षण होता रहता है। यह संभव है कि किसी समाज में परिवर्तन की गति तीव्र हो तो और कहीं धीमी किंतु परिवर्तन होता सब जगह है, चाहे उसके स्वरूप में कितनी भी भिन्नता क्यों न हो। विश्व में कोई भी दो समाज पूर्णत: एक से नहीं हैं। अतः परिवर्तन कभी भी पूर्णत: एक जैसे नहीं हो सकते। "किन्हीं भी दो समाजों का इतिहास एक समान नहीं होता, किन्हीं भी दो समाजों की संस्कृति एक-जैसी नहीं होती, कोई भी एक-दूसरे का प्रतिरूप नहीं है।"

सामाजिक परिवर्तन स्वाभाविक और अवश्यंभावी है

सामाजिक परिवर्तन स्वाभाविक है तथा समयानुकूल होता रहता है। मानव स्वभाव प्रत्येक क्षण नवीनता चाहता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है तथा अवश्यंभावी है। यह किसी की इच्छा अथवा अनिच्छा पर निर्भर नहीं होता। यद्यपि आधुनिक युग में इसे नियोजित किया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि सामाजिक परिवर्तन स्वाभाविक और अवश्यंभावी है।

प्रत्येक समाज में सामाजिक परिवर्तन की गति एक-समान नहीं है

सामाजिक परिवर्तन में एक विशेषता यह भी पाई जाती है कि इसकी गति हर समाज में एक-सी नहीं होती। साथ ही, ग्रामीण एवं नगरीय समुदायों में परिवर्तन की गति समान नहीं पाई जाती। परिवर्तन न केवल एक समाज से दूसरे समाज में ही भिन्न पाया जाता है, बल्कि एक ही समाज के विभिन्न समूहों में भी इसकी गति असमान होती है। यदि दो समाजों में एक-समान परिवर्तन के कारक पाए भी जाएँ तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि दोनों समाजों में समान गति से एक-जैसा ही परिवर्तन होगा क्योंकि कारकों पर देश, काल एवं परिस्थिति का भी प्रभाव पड़ता है।

अतः परिवर्तन के कारक किस समाज में अधिक प्रभावशाली होंगे और किसमें कम, यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता। उदाहरणार्थ- यूरोप में औद्योगीकरण, नगरीकरण, व्यक्तिवाद, स्त्रियों की स्वतंत्रता

तथा आवागमन एवं संदेशवाहन के साधनों से अनेक परिवर्तन बड़ी तीव्रता से आए हैं। भारत में इन परिवर्तनों की गति अपेक्षाकृत मंद है। भारतीय नगरों में गाँवों की अपेक्षा तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं।

सामाजिक परिवर्तन में समय का तत्त्व

"मानव अनुभूति में समय का भाव और परिवर्तन का अभ्यास अपृथकनीय रूप से जुड़े हुए हैं। सीधे-सीधे शब्दों में हम प्राय: यह कहते हैं कि पुराने जमाने में ऐसा होता था अथवा हमारे पूर्वजों के जमाने में ऐसा होता था। इन वाक्यांशों से यह सिद्ध होता है कि हम दो समयों की तुलना कर रहे हैं- एक वह जो पहले था और एक वह जो आज है। इन दोनों समयों के बीच उत्पन्न हुई भिन्नता ही परिवर्तन है। यदि सूत्र रूप में कहा जाए तो हम कह सकते हैं कि तब (T1) और अब (T2) के बीच अंतर (T2-T1) ही परिवर्तन का द्योतक है। इस प्रकार हम पुन: उद्धृत करना चाहेंगे जो स्पष्ट घोषणा करते हैं कि समय के तत्त्व के अभाव में परिवर्तन की बात करना निरर्थक है। "समय बिना कोई परिवर्तन नहीं है। परिवर्तन के अभाव में, इसी प्रकार समय का कोई अर्थ नहीं है"।

सामाजिक परिवर्तन के बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती

सामाजिक परिवर्तन के संबंध में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती क्योंकि कभी-कभी आकस्मिक कारक भी परिवर्तन ला देते हैं। सामाजिक परिवर्तन समाज या सामाजिक संबंधों में परिवर्तन है। हमारे व्यवहार भी परिवर्तनशील हैं। यही कारण है कि सामाजिक व्यवहार के बारे में भविष्यवाणी करते समय हम मात्र अनुमान ही लगा सकते हैं किंतु दृढ़तापूर्वक कुछ भी नहीं कह सकते। जैसे- अस्पृश्यता के विरुद्ध सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन के द्वारा छुआ-छूत व ऊँच-नीच की भावना कम होगी, यह तो कहा जा सकता है किंतु समाज में ये सब कब पूर्णतः समाप्त होगा, यह नहीं कहा जा सकता। सामाजिक परिवर्तन की दिशा के बारे में तो अनुमान लगाया जा सकता है परंतु भविष्यवाणी करना कठिन कार्य है।

सामाजिक परिवर्तन अमूर्त है

सामाजिक परिवर्तन एक अवधारणा है और अवधारणा अमूर्त होती है। अत: सामाजिक परिवर्तन भी अमूर्त है। सामाजिक परिवर्तन क्योंकि सामाजिक संबंधों में होने वाला परिवर्तन है और सामाजिक संबंधों को न तो देखा जा सकता है और न छुआ जा सकता है। इनका केवल अनुभव किया जा सकता है। क्योंकि सामाजिक संबंध अमूर्त होते हैं। अत: उनमें होने वाला परिवर्तन भी अमूर्त हुआ।

सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न प्रतिमान होते हैं

परिवर्तन का कोई एक प्रतिमान नहीं है। समाज में होने वाले सभी परिवर्तनों को देखने के बाद हम इसी निष्कर्ष पर आते हैं कि समाज में सैकड़ों प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं। कभी परिवर्तन उतार-चढ़ाव के रूप में होता है तो कभी समरेखीय और कभी चक्रवत् तो कभी लहरदार। जनसंख्या, आर्थिक जगत एवं फैशन में परिवर्तन का जो प्रतिमान देखने में आता है, वह मूल्यों एवं मनोधारणाओं के परिवर्तन में नहीं दिखाई देता।

सामाजिक परिवर्तन तुलनात्मक एवं सापेक्ष होता है

समाजशास्त्री सामाजिक परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं क्योंकि सामाजिक परिवर्तन का कोई निश्चित मापदण्ड नहीं है। इसलिए सामाजिक परिवर्तन को जानने का यही एकमात्र उपाय रह जाता है कि या तो एक ही समय में दो विभिन्न समाजों की तुलना की जाए या एक ही समाज की दो विभिन्न कालों में तुलना की जाए। इस तुलना के आधार पर ही यह अनुमान लग सकता है कि किसी समाज में क्या परिवर्तन हो रहे हैं और वे परिवर्तन किस दिशा अथवा गति से हो रहे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि सामाजिक परिवर्तन सदैव तुलनात्मक एवं सापेक्ष होते हैं।

सामाजिक परिवर्तन एक तटस्थ अवधारणा है

सामाजिक परिवर्तन एक तटस्थ अवधारणा है क्योंकि यह तो दो समयावधियों के अंतराल में किसी समाज में उत्पन्न भिन्नता-मात्र है। इसलिए इससे तो केवल इतना पता चलेगा कि कोई चीज जिस रूप में पहले थी उस रूप में अब नहीं है। वह अंतर समाज के लिए अच्छा रहा या बुरा, यह एक अलग बात होगी जिसे मापने के लिए निश्चित कसौटियों की जरूरत होगी।

सामाजिक परिवर्तन के विस्तृत प्रतिमान

सामाजिक परिवर्तन एक विस्तृत अवधारणा है जिसका कोई एक निश्चित प्रतिमान नहीं है। मुख्य प्रश्न हमारे सामने यह है कि सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करने के लिए किस कारक को आधार माना जाए और व्याख्या करने में कौन-सी पद्धति को अपनाया जाए? विद्वानों ने इस समस्या को निम्नलिखित दो प्रकार से समझाने का प्रयास किया है-

कारकों की विविधता एवं अन्योन्याश्रितता

जब हम समाज में होने वाले किसी भी परिवर्तन को देखते हैं तो यह ज्ञात होता है कि उसके एक नहीं बल्कि अनेक कारक हैं जो परस्पर भिन्न न होकर अन्योन्याश्रित हैं अर्थात् ये एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। किसी सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए मनोधारणाओं या मनोवृत्तियों में परिवर्तन तथा मानव मनोवृत्तियों पर उसके सम्पूर्ण पर्यावरण एवं दशाओं का प्रभाव पड़ता है। इस परिवर्तन को समझने के लिए आर्थिक दशाओं तथा प्रौद्योगिकीय एवं राजनीतिक पक्षों से भी परिचित होना पड़ता है।

परिमाणात्मक पद्धति की असमर्थता

कुछ विद्वान् यह विश्वास करते हैं कि हर सामाजिक घटना का अध्ययन हम परिमाणात्मक सांख्यिकीय पद्धति के द्वारा कर सकते हैं। उदाहरणार्थ- अपराधों का अध्ययन करने के लिए हम संयुक्त परिवार के विघटन पर भी दृष्टिपात करते हैं। कितने संयुक्त परिवार विघटित हुए यह जानने के लिए हमें उनकी संख्या गिननी होगी जिसमें इस पद्धति का सहारा लेना होगा। परंतु सामाजिक संबंधों का एक परिमाणात्मक पहलू भी है जो अति न्यून है। भौतिक विज्ञानों के समान परिमाणात्मक पद्धति को यदि हम समाजशास्त्र में भी लागू करते हैं तो बड़ा भय उपस्थित हो जाता है। सामाजिक घटनाओं में प्राकृतिक घटनाओं के समान किसी परिस्थिति में से अलग किए जा सकने वाला कोई भाग नहीं है। विभिन्न भाग अपने संदर्भ में अलग होते ही अर्थहीन हो जाते हैं।

यद्यपि सामाजिक परिवर्तन के अनेक प्रतिमान देखे जा सकते हैं। निम्नलिखित तीन प्रतिमान हमारे सम्मुख प्रस्तुत हैं:-

पहला प्रतिमान- रेखीय परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन के प्रथम प्रतिमान के अनुसार परिवर्तन यकायक (Suddenly) होता है और फिर क्रमश: मंदगति से अनिश्चितकाल तक सदैव ऊपर की ओर होता रहता है। अत: यह परिवर्तन उत्तरोत्तर वृद्धि करता जाता है। परिवर्तन की यह रेखा सदैव ऊपर की ओर चलती रहती है। उदाहरणार्थ- हम आवागमन एवं संदेशवाहन के साधनों को ले सकते हैं। एक बार जब कोई आविष्कार हो जाता है तो वह उत्तरोत्तर ऊपर चला जाता है तथा अन्य अनेक नवीन आविष्कारों का मार्ग भी प्रशस्त कर देता है। प्रौद्योगिकी (Technology) में होने वाले परिवर्तन भी इसी प्रकार के होते हैं। इसी प्रकार विज्ञान में होने वाले परिवर्तन भी इससे बहुत कुछ साम्य रखते हैं।

दूसरा प्रतिमान- उन्नति-अवनतिशील परिवर्तन

परिवर्तन के इस प्रतिमान के अनुसार परिवर्तन एवं विकास क्रमश: नहीं होता है वरन् एक ही स्थिति के बिल्कुल विपरीत स्थिति भी तुरंत ही परिवर्तित हो जाती है। कुछ समय तक परिवर्तन का प्रवाह लगातार ऊपर की दिशा में जाता है। बाद में यह एकदम विपरीत दिशा में प्रवाहित हो जाता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विकास और अवनति के ये सोपान परिलक्षित होते रहते हैं। आर्थिक जगत तथा जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन इसी प्रतिमान की अभिव्यक्ति करते हैं। आर्थिक जगत में सामान्यत: अनेक उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

तीसरा प्रतिमान- चक्रीय परिवर्तन

परिवर्तन का यह प्रतिमान दूसरे से काफी मिलता-जुलता है। यह परिवर्तन पूरे जीवन अथवा उसके कई भागों में उसी प्रकार से देखने में आता है जैसे प्राकृतिक जगत में। इसकी तुलना साइकिल के पहिये की भाँति चलने वाले चक्र से की जा सकती है। प्राकृतिक जगत में इस प्रकार के परिवर्तन देखने में आते हैं। मौसमों का क्रमश: चक्रीय परिवर्तन इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। जैसे समुद्र अथवा नदी में एक के पीछे दूसरी लहरें उठती रहती हैं और उस प्रक्रिया का कोई अंत नहीं होता, ठीक उसी प्रकार परिवर्तन आदि-अंत विहीन निरंतर होता रहता है।

सामाजिक परिवर्तन के कारक

सामाजिक परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है जिसके अनेक कारक हो सकते हैं। सामाजिक परिवर्तन का बिना किसी कारक के क्रियाशील होना असंभव है परंतु यह भी सत्य है कि किसी एक कारक से समाज में परिवर्तन होना मुश्किल है। अत: हम यहाँ सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न कारकों का अध्ययन करेंगे:-

भौतिक कारक

समाजशास्त्र में हम भौतिक, भौगोलिक या प्राकृतिक पर्यावरण में अंतर नहीं करते। जब कोई भी परिवर्तन हमारे भौतिक या भौगोलिक पर्यावरण में होता है तो उसका प्रभाव हमारे समाज पर भी पड़ता है। भौतिक पर्यावरण; यथा पृथ्वी की बनावट, उसका धरातल, समुद्र तल से ऊँचाई, पर्वत, चट्टानें, नदियाँ, झरने तथा पठार, वन, झील, जलवायु, मौसम तथा रेगिस्तान इत्यादि मानव जीवन को प्रभावित करते हैं।

आचार-विचार से लेकर रहन-सहन तक तथा समाज की अवनति और उन्नति पर इसका प्रभाव परिलक्षित होता है। अकाल, तूफान, पहाड़ गिरना, बाढ़ आना इत्यादि भौगोलिक कारक समाज में निराश्रयता, भुखमरी, चरित्र भ्रष्टता, अपराध, भिक्षावृत्ति आदि के जन्मदाता होते हैं।

<u>जैविक कारक</u>

जैविक कारक में हम वंशानुक्रमणीय पद्धति में होने वाले परिवर्तनों को रखते हैं। वंशानुक्रमण ही यह निर्धारित करता है कि आगे आने वाली पीढ़ी का स्वास्थ्य कैसा होगा? जनसंख्या का जैसा स्वास्थ्य होगा वैसी ही शारीरिक एवं मानसिक कुशलता एवं क्षमता उनमें होगी। जैविक कारक ही विवाह की आयु एवं उत्पादन दर को भी प्रभावित करते हैं। यदि हमारे वंशानुक्रमण में कोई परिवर्तन होता है तो हमारे समाज में अनेक परिवर्तन होते हैं। जैविक जगत में होने वाले परिवर्तन सामाजिक जगत में होने वाले परिवर्तनों को जन्म देते हैं।

<u>जनसंख्यात्मक कारक</u>

जनसंख्या में होने वाला परिवर्तन समाज में अनेक परिवर्तनों को जन्म देता है। यदि किसी देश की जनसंख्या के स्वास्थ्य में गिरावट आती है तो उसका प्रभाव वहाँ के समाज पर अवश्य पड़ता है। जनसंख्या के आकार में परिवर्तन भी समाज में अनेक परिवर्तनों को जन्म देता है। यदि किसी देश की जनसंख्या का आकार बड़ा होगा तो उस देश में ऐसे रीति-रिवाज विकसित हो जाएँगे जिनके द्वारा बढ़ती हुई जनसंख्या को कम किया जा सके। भारत में परिवार नियोजन कार्यक्रम इसी दृष्टिकोण से विकसित कार्यक्रम है। इसके विपरीत, यदि किसी देश की जनसंख्या का आकार यकायक गिर जाता है तो उस देश के रीति-रिवाजों में भी परिवर्तन होता है।

<u>प्रौद्योगिकीय कारक</u>

एक समय था जब मनुष्य भोजन को एकत्र किया करता था। उत्पादन से उसका परिचय ही नहीं था। कृषि युग में आते-आते वह उत्पादन तो करने लगा किंतु वह उत्पादन केवल उपभोग के लिए ही होता था। आज प्रौद्योगिकी के विकास का युग है। हर क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकी का विकास हुआ है। इसने हमारे जीवन को तीव्र गति से बदला है। हमारे मूल्यों को इसने प्रभावित किया है। आज खेतों में काम करने के लिए ट्रैक्टर, यातायात एवं आवागमन के लिए बस एवं मोटर, रेलगाड़ी तथा हवाई जहाज, अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए टेलीफोन, तार, रेडियो, समाचार पत्र तथा पत्रिकाएँ आदि, दुश्मन से रक्षा करने एवं दुश्मन की सेनाओं का संहार करने के लिए टैंक इत्यादि, औषधि एवं उपचार के रूप में पैंसिलीन तथा क्लोरोफॉर्म की खोज, हृदय परिवर्तन तथा फेफड़ों का बदलना एवं उनका सफल ऑपरेशन करना आदि से मानव समाज में होने वाले परिवर्तन की गति गंभीर रूप से प्रभावित होने लगी है।

नसबंदी ऑपरेशन ने समाज के विचारों को प्रभावित किया है। ट्रैक्टर ने हमारे कृषि उत्पादन को दुगना कर दिया है। नवीन प्रौद्योगिकी से हमारे जीवन में नित्य परिवर्तन होते रहते हैं। वेब्लन ने सामाजिक परिवर्तन लाने में प्रौद्योगिकीय कारकों को निर्णायक माना है।

आर्थिक कारक

जैसे-जैसे आर्थिक जगत में विकास होता है और नई आर्थिक व्यवस्था का प्रादुर्भाव होता है वैसे-वैसे समाज में अनेक परिवर्तन हुआ करते हैं। आज समाज में आर्थिक क्रियाएँ इतना महत्वपूर्ण स्थान पाती जा रही हैं कि हमारी सामाजिक क्रियाएँ उनके चारों ओर घूमती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। हमारी हर क्रिया के पीछे आर्थिक स्वार्थ निहित रहता है। आज यदि किसी व्यक्ति की आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन होता है तो अन्य स्थितियाँ स्वयं बदल जाती हैं। इस विवेचन से हम कह सकते हैं कि समाज की आर्थिक क्रियाओं में होने वाला परिवर्तन पूरे समाज में ही परिवर्तन ले आता है।

सांस्कृतिक कारक

सामाजिक परिवर्तन लाने में संस्कृति का भी महत्वपूर्ण हाथ है। संस्कृति समाज की ही उपज है और समाज से घुली-मिली धारणा है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों में इतना अधिक संबंध है कि कुछ समाजशास्त्रियों ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों में अंतर ही नहीं किया है। वास्तव में, बिना सांस्कृतिक मूल्यों के हम सामाजिक परिवर्तन का मूल्यांकन नहीं कर सकते।

राजनीतिक कारक

सामाजिक परिवर्तन का संबंध राजनीतिक जगत की क्रियाओं से भी है। उत्तर प्रदेश राज्य को दो या चार भागों में बाँटने की माँग करना, भाषा के आधार पर सूबे की माँग करना, अनशन करना एवं धरना देना, विभिन्न प्रकार की अनुचित माँगों को लेकर आंदोलन करना इत्यादि राजनीतिक क्रियाएँ हैं। इनके कारण समाज में अत्यधिक परिवर्तन होता है। राज्य एक राजनीतिक उद्देश्य से संगठित समुदाय है। उसके पास शक्तिशाली सरकार है जो सामाजिक नीतियों के निर्धारण में प्रमुख भूमिका निभाती है।

वह बहुत-से परिवर्तन बलपूर्वक कर सकता है। उसका निर्णय सभी को मान्य होता है। अत: सामाजिक परिवर्तन के पीछे राजनीतिक हलचलों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। किसी देश की राजनीतिक व्यवस्था अथवा इसमें यकायक परिवर्तन उस देश के निवासियों के परस्पर संबंधों को प्रभावित करते हैं।

मनोवैज्ञानिक कारक

मनोवैज्ञानिक कारक प्रत्येक कार्य में उपस्थित रहते हैं। वस्तुत: सामाजिक संबंध, मानसिक संबंध ही होते हैं। हमारी समस्त क्रियाओं का उत्पत्ति-स्थल मस्तिष्क ही है। अत: क्रियाओं में परिवर्तन होने का तात्पर्य है, मस्तिष्क में परिवर्तन अर्थात् हमारे मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में परिवर्तन। हमारे सोचने-विचारने के ढंग पहले बदलते हैं, उनके बाद ही हमारे व्यवहार में परिवर्तन होता है। भौतिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त हमारी कुछ मानसिक आवश्यकताएँ भी होती हैं। आवश्यक नहीं कि यदि हम भौतिक एवं सामाजिक रूप से संतुष्ट हों तो मानसिक रूप से भी संतुष्ट होंगे।

संघर्ष

सामाजिक परिवर्तन में संघर्ष की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रत्येक समाज में सहयोग तथा संघर्ष दोनों पाए जाते हैं। जहाँ सहयोग जीवन या व्यवस्था में एकरूपता, मतैक्य, एकीकरण एवं संगठन का

विकास करता है, वहीं दूसरी ओर संघर्ष, दमन, विरोध व हिंसा की उत्पत्ति करता है। आज सामाजिक जीवन में सामान्य सहमति न होकर असहमति, प्रतिस्पर्धा तथा स्वार्थों में संघर्ष की प्रधानता होती जा रही है।

सामाजिक बनाम सांस्कृतिक परिवर्तन

सांस्कृतिक परिवर्तन समाज के आदर्शों और मूल्यों की व्यवस्था में होने वाला परिवर्तन है।, "हमें याद रखना चाहिए कि परिवर्तन से, चाहे उसमें कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न हों, बचा नहीं जा सकता।" परंतु सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन के अर्थ एवं अंतर के विषय में विद्वानों के बीच तीव्र मतभेद दिखाई देता है। अत: यह उचित होगा कि सांस्कृतिक परिवर्तन के अर्थ एवं उसकी विशेषताओं को स्पष्ट कर दिया जाये ताकि इसमें तथा सामाजिक परिवर्तन में अंतर स्पष्ट हो सके।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन को कुछ लोग एक समान अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। इससे कभी-कभी यह भ्रम पैदा हो जाता है कि क्या सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्कृतिक परिवर्तन एक ही अवधारणा के दो नाम हैं। इस भ्रम का प्रमुख कारण समाज एवं संस्कृति की अवधारणा को स्पष्ट रूप से एक-दूसरे से अलग न कर पाना है। कुछ विद्वान् इसी त्रुटि के शिकार हुए हैं। सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के विषय में जो भ्रांति पैदा होती है उसका कारण विद्वानों में दोनों के अर्थ के बारे में पाया जाने वाला मतभेद है।

संस्कृति से संबंधित

सांस्कृतिक परिवर्तन का संबंध केवल मात्र समाज की संरचना एवं प्रकार्यों तक ही सीमित नहीं है, अपितु संस्कृति के किसी अंग (यथा कला, भाषा, विज्ञान, विश्वास, आचार, रूढ़ियाँ, प्रौद्योगिकी, प्रतीक, दर्शन इत्यादि) में होने वाले परिवर्तन को सांस्कृतिक परिवर्तन कहा जाता है। अत: यह संस्कृति से संबंधित है।

जटिल प्रकृति

संस्कृति एक अत्यंत विस्तृत एवं जटिल सम्पूर्ण है जिसमें असंख्य तत्त्व होते हैं। इसे भौतिक एवं अभौतिक दो भागों में बाँटा जा सकता है। अतः सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रकृति अपेक्षाकृत जटिल है।

विस्तृत क्षेत्र

सांस्कृतिक परिवर्तन एक विस्तृत अवधारणा है अर्थात् इसका क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। इसका अनुमान हम इसी बात से लगा सकते हैं कि सामाजिक परिवर्तन स्वयं सांस्कृतिक परिवर्तन का एक अंग है।

सार्वभौमिकता

सांस्कृतिक परिवर्तन सार्वभौमिक है अर्थात् यह प्रत्येक समाज में न्यूनाधिक गति में पाया जाता है। कुछ समाजों में अभौतिक संस्कृति का पक्ष बहुत ही कम परिवर्तित हुआ है, जबकि भौतिक पक्ष में परिवर्तन से अप्रत्यक्ष रूप से अभौतिक पक्ष भी प्रभावित हो रहा है।

असमान गति

सांस्कृतिक परिवर्तन की गति सभी समाजों में एक समान नहीं है। पश्चिमी समाजों में भौतिक संस्कृति में अत्यधिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप वहाँ की अभौतिक संस्कृति अर्थात् व्यक्तियों का रहन-सहन, परुपराएँ, मूल्य व विश्वास आदि में तीव्रता से परिवर्तन हुए हैं। भारतीय समाज में यद्यपि भौतिक संस्कृति में तीव्रता से परिवर्तन हुए हैं तथापि अभौतिक संस्कृति में अपेक्षाकृत कम परिवर्तन हुए हैं। सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन में अंतर करना एक कठिन कार्य है। फिर भी, दोनों प्रकार के परिवर्तन एक ही नहीं हैं।

इन दोनों में पाए जाने वाले अंतरों को निम्नलिखित आधारों पर स्पष्ट किया जा सकता है-

1. सामाजिक एवं सांस्कृतिक जगत में होने वाले परिवर्तनों की गति के आधार पर

सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्कृतिक परिवर्तन में अंतर करने का एक दृष्टिकोण इन दोनों की गति में अंतर देखना है। सामाजिक परिवर्तन अधिक गतिशील है अर्थात् इसमें अधिक तीव्रता से परिवर्तन होता है, जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन कम गतिशील है अर्थात् इसमें बहुत कम अथवा धीमी गति से परिवर्तन होता है। इसीलिए सामाजिक संबंधों में जिस तीव्रता से परिवर्तन होता है वैसा परिवर्तन प्रायः हमारी संस्कृति के अंगों जैसे कला, धर्म, दर्शन तथा रूढ़ियों में दिखाई नहीं देता।

2. समाज एवं संस्कृति की अवधारणाओं की विस्तृतता के आधार पर

यदि हम यह जान लें कि समाज एवं संस्कृति दोनों में से कौन सी अवधारणा अधिक विस्तृत है तो हम सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन में स्पष्ट अंतर कर सकेंगे।

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि संस्कृति एक बहुत ही विस्तृत एवं जटिल सम्पूर्ण (Complex whole) है जिसमें असंख्य तत्त्व आते हैं। इस प्रकार, सामाजिक संगठन में होने वाले परिवर्तन भी सांस्कृतिक परिवर्तनों के अंतर्गत आ जाते हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि सांस्कृतिक परिवर्तन की अवधारणा सामाजिक परिवर्तन से अधिक विस्तृत है। सामाजिक परिवर्तन तो सांस्कृतिक परिवर्तन का एक अंग मात्र है। "सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन का, जो निश्चित रूप से एक बड़ी अवधारणा है, एक भाग मात्र है। बाद वाली अवधारणा अर्थात् सांस्कृतिक परिवर्तन, संस्कृति के किसी भी भाग जिसमें हम कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, दर्शन इत्यादि को सम्मिलित करते हैं, में होने वाले सभी परिवर्तनों का आलिंगन करती है तथा साथ ही-साथ सामाजिक संगठन के नियमों एवं स्वरूपों के परिवर्तन भी इसमें सम्मिलित हैं।"

3. समाज एवं संस्कृति की प्रकृति के आधार पर

समाज एवं संस्कृति दो अलग-अलग वस्तुएँ हैं। "समाज वर्तमान संबंधों का बदलता हुआ संतुलन है।" यह एक प्रक्रिया है, उत्पत्ति नहीं है तथा कालक्रम है। समाज में जैसे ही कोई परिर्वतन आता है वैसे ही सामाजिक संबंध बदल जाते हैं और उनके स्थान पर नए आ जाते हैं। किंतु संस्कृति के बारे में यह बात लागू नहीं होती। संस्कृति एक उत्पत्ति है, जो उस या उन शक्तियों के समाप्त हो जाने के बाद भी बनी रहती है जिन्होंने उसे जन्म दिया था किंतु अब मौजूद नहीं हैं। सामाजिक संबंधों की कल्पना नहीं की जा सकती।

सांस्कृतिक वस्तुओं को हम किसी संग्रहालय में रख सकते हैं किंतु सामाजिक संबंधों को हम संग्रहालय में नहीं रख सकते।

अतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन में प्रमुख अंतर निम्नांकित हैं-

- सामाजिक परिवर्तन संरचना में होने वाले या सामाजिक संगठन में होने वाले परिवर्तन को कहते हैं, जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन संस्कृति के विभिन्न अंगों में होने वाला परिवर्तन है।
- सामाजिक परिवर्तन की गति अपेक्षाकृत तीव्र है, जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन (विशेषतः अभौतिक संस्कृति) की गति अपेक्षाकृत धीमी है।
- सामाजिक संबंधों में परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन आता है, जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन प्रसार तथा वैज्ञानिक आविष्कारों के द्वारा आता है।
- सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन का एक हिस्सा है। यह सांस्कृतिक परिवर्तन की अपेक्षा संकुचित है तथा इसलिए इसका नियोजन सरल है, जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन क्योंकि अधिक व्यापक है इसलिए इसका नियोजन संभव नहीं है।
- सामाजिक परिवर्तन का संबंध व्यक्तियों से है, वस्तुओं से नहीं जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन का संबंध मानव द्वारा उत्पादित भौतिक तथा अभौतिक वस्तुओं से है।
- सामाजिक परिवर्तन व्यक्ति के संबंधों में होने वाले परिवर्तनों तथा वस्तुओं के उत्पादकों के संबंधों में परिवर्तन को बताता है जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन व्यक्ति-पदार्थ के संबंधों तथा मानव द्वारा उत्पादित वस्तुओं में होने वाले परिवर्तनों को बताता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन एक-दूसरे से भिन्न होते हुए भी परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं क्योंकि सामाजिक परिवर्तन संस्कृति को प्रभावित करता है जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभाव समाज पर पड़ता है।

डिंपल साव, क.अ.अ
सेमिलाक, बेंगलूरु

बेरोजगारी से रोजगार तक का सफर

मानव सृष्टि का सर्वाधिक मननशील एवं विवेकवान प्राणी है। वह अपने मनन-चिंतन एवं विवेक के आधार पर नित्य नवीन अनुसंधान करता है और आने वाली पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है। लेकिन आधुनिक युग का मानव बेरोजगारी जैसे अभिशाप से ग्रस्त है। बेरोजगारी का यह अभिशाप सुरसा की मुँह की भाँति हर मानव को निगलने के लिए तत्पर है। यह मानव की सृजनात्मक क्षमता को कम करके उसे निकृष्ट प्राणी के रूप में तब्दील कर दे रही है। सृष्टी का सर्वाधिक मननशील प्राणी मानव आज अपनी अस्मिता की खोज में भटक रहा है। वह सोचता है आखिर उसका जन्म हुआ किसलिए है? क्या जन्म लेना और मर जाना ही जिंदगी का नाम है या जीवन का अर्थ व्यापक है?

इन्हीं सारे प्रश्नों के उधेड़बुन में उसका जीवन नित्य निरर्थक बनता जा रहा है। कहीं वह कुंठा का शिकार है तो कहीं वह हताश-निराश और विक्षिप्त बैठा हुआ है। वह समझ नहीं पा रहा है कि आखिर इतना परिश्रम वह क्यों कर रहा है। विद्यार्थी काल से अच्छे-अच्छे स्कूल में पढ़ना-लिखना, बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ अर्जित करना, दिन-रात एक करके अपने गरीबी के अभिशाप को मिटाने के लिए अनथक पढ़ाई करना, तत्पश्चात भी बेरोजगार रह जाना। आखिर कमी कहाँ रह जा रही है? क्या इसे किस्मत का दोष कहा जाय या इसके लिए स्वयं मानव ही जिम्मेदार है? निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। मानव नित्य प्रेरणाप्रद विचारों को सुनता है, वह किसी व्यक्ति को अपना आदर्श बनाता है, उन्हें और उनके गुणों को आत्मसात करने की कोशिश करता है। फिर भी उसके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आता और वह निरंतर निराशा के गर्त में गिरता चला जाता है। रोजगार के अभाव में वह बेरोजगार बन जाता है। वह सोहनलाल द्विवेदी की कविता की पंक्तियों से प्रेरणा लेता है -

असफलता एक चुनौती है इसे स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखों और सुधार करो
कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालो की कभी हार नहीं होती।

अतः वह अपने भीतर सोये हुए साहस को पुनः जगाता है। मार्ग में आने वाले बाँधा-विघ्नों को पार कर, उत्साह के साथ आगे बढ़ते हुए सफलता प्राप्त कर ही लेता है और सभी को यह संदेश भी देता है— "**मानव जब जोर लगाता है पत्थर भी पानी बन जाता है"।** यदि साहस और धैर्य हो तो किस्मत को भी बदला जा सकता है।

हम सभी मनुष्य है। हालांकि हमारे सोचने-समझने, बोलने, पढ़ने-लिखने, उठने-बैठने के तरीके थोड़ा भिन्न है। पर एक बात सभी में समान है कि हम मनुष्य है और मनु की संतान है। गुणों में सतही भेद के

बावजूद भी हमारे पास अटूट क्षमता एवं साहस है। अपने साहस के दम पर सातों सागर पार करने की क्षमता हमारे अंदर मौजूद है। किसी कवि की निम्न पंक्तियाँ है -

सागर की अपनी क्षमता है पर माझी भी कब थकता है
जब तक हाथों में स्पंदन है उसका हाथ नहीं रूकता है,
इसी के दम पर कर दे सातों सागर पार
तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।

अतः मनुष्य के अंदर का साहस विपतिकाल में तूफानों से भी लड़ सकता है। बेरोजगारी एक चुनौती है और इस चुनौती का सामना हमें स्वयं करना है। जैसे रात के बाद दिन, अंधकार के बाद प्रकाश, पतझड़ के बाद बसंत का आना निश्चित है उसी प्रकार बेरोजगारी से जुझने के बाद रोजगार मिलना तय है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह – 2023

राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम

कविता खंड

सृष्टी नागर, तकनीशियन ए
सेमिलाक, बेंगलूरु

फोन कॉल

इतने सालों बाद मुझे किसी का कॉल आया
मैंने अपनी मम्मी जी को बताया
मेरे घरवालों ने फिर मुझे अच्छा-खासा सुनाया
बोले फलाने के बेटे का 80% नंबर आया
तुमने ना मेहनत की, ना पढ़ाई की,
बस दिन भर फोन चलाया
पैसे पेड़ पर नहीं उगते ऐसा उन्होंने मुझे बतलाया
जब मैंने उन्हें अपना रिजल्ट दिखाया
फिर उन्होंने फलाने को फोन लगाया
बोले- हमारी बेटी ने कर दिखाया
आपके बेटे से ज्यादा नंबर लाया।

कभी भी अपनी तुलना दूसरों के साथ मत करना,
क्योंकि आपका किरदार, आपसे अच्छा कोई नहीं निभा सकता।

जे. जितेंद्र कुमार, कनिष्ठ विशेषज्ञ - ॥
आर.सी.एम.ए (कोरापुट)

रिश्तों को समझिए और...

रिश्तों को समझिए और प्रेम से सहेजिए,
इसमें खुशियाँ अनंत हैं, इसे न छोड़िए।

रिश्तें और रिश्तेदार ही संस्कृति की पहचान हैं,
जानवर कितना भी सीख ले, नहीं पाता सम्मान है।

रिश्तें निभाने में धन और समय तो खर्च होता है,
हो बुरा वक्त तो रोने को कंधा वहीं देता है।

रिश्ता प्रेम का आधार और सृजन करता परिवार है,
नए पुराने रिश्तों से ही मानव का सजता संसार है।

हर रिश्तों को समझिए और निभाइए,
देखिए उसमें कितना खुशियों का भंडार है।

रिश्तेदार हैं तो रूठना मनाना तो काम है,
सही अर्थ में आत्मीयता की यहीं पहचान है।

नए रिश्तों को देख पुराना न भुलाइए,
रिश्तों को समझिए फिर खुशियाँ लाइए।

कमलेश कुमार, व.त.स बी
सेमिलाक, बेंगलूरु

बचपन

बहुत याद आता है वो बीता हुआ जमाना,
वो गांव की गलियों में पीपल पुराना।

छुपा करके सब की नजर से हमेशा,
वो दादा जी के कुर्ते से सिक्के चुराना।

वो कागज की जहाज बना कर उड़ाना,
वो पढ़ने के डर से किताबें छुपाना।

वो आमों और जामुन के पेड़ों पर पत्थर चलाना,
जो पत्थर किसी को लगे तो वहाँ से भाग जाना।

वो साइकिल के पहियों की गाड़ी बनाना,
बड़े चाव से दूसरों को सिखाना।

मगर यादें बचपन की कहीं खो गई हैं,
नींदो की जैसी कहीं सो गई हैं।

उड़ने दो परिंदों को अभी शोख़ हवा में,
बचपन के जमाने फिर लौट कर नहीं आते।

अरुण कुमार शुक्ल, वै.एफ
सेमिलाक, बेंगलूरु

पत्नी

जीवन की साथी, दिल की धड़कन,
प्रेम की बाँहों में एक सुरमई धुन।
विश्वास की बुनियाद, प्रेम की बाँध,
पत्नी है वह जो हर वक़्त करती दुआ।

संगीत की तार, रंगों का सागर,
जिनका साथ ना हो तो रहता जीवन बेकार।
उजाला बनकर, जीवन में आती है,
धूप की तरह, खुशियों को छाती है।

संगी साथ चलती, हर राहों पर,
समर्थन और सहारा, ज़िंदगी की वो तारा।
चाहत का पुतला, दिल की मोहर,
उसके संग बिताए, हर पल में खुशियाँ हैं ढेर।

परिवार की रक्षा, बच्चों को संस्कार,
पत्नी है वह जो सबकी करती है ख़्वाहिश पूरी।
संघर्ष में भी खड़ी रहती है,
समर्थन देकर, आगे है बढ़ाती।

प्रेम की मूर्ति, विश्वास की राह,
जीवन की साथी, सुनहरा संगम।
मोहब्बत का फूल, खुशियों की मिसाल,
उसकी मुस्कान से, दिल में बसता है प्यार।

सपनों की राजकुमारी, नज़रों की तारा,
उसकी मुस्कान में, खिलता है जीवन सारा।
समृद्धि की किरण, प्रेम का सागर,
पत्नी है वह जो हमें हर पल है प्यारी।

प्यारी-सी पत्नी, दिल की रानी,
जीवन की उमंग, सुख-दुख की कहानी।
चंचल मन की, मीठी बातें,
हमसफ़र जिंदगी की, ख़ुशियों का आधार।

जीवन की साथी, दिल की धड़कन,
प्रेम की बाँहों में एक सुरमई धुन।
विश्वास की बुनियाद, प्रेम की बाँध,
पत्नी है वह, जो हर वक़्त करती दुआ।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग-पग-तल में
पीयुस स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।

डॉ. प्रज्ञा मिश्रा, त.अ.बी
आर.सी.एम.ए (लखनऊ)

खिड़की

कभी सोचा है कितना कुछ देती है हमें
घर की ये छोटी-सी खिड़की।
इसे सिर्फ दीवारों पर बना एक खुला हिस्सा मत समझना
हमें बाहरी दुनिया की एक छोटी-सी झलक दिखलाती है ये खिड़की।
जिन लम्हों में हम शामिल नहीं हो सकते
उन लम्हों से हमें खुद-ब-खुद जोड़ जाती है ये खिड़की।
जब ठंडी हवा के बगैर हम बेचैन हो करवटें बदला करते
तो मस्त हवा के उन झोंको को हम तक खींच कर ले आती है ये खिड़की।
कहीं दूर पहाड़ों से निकल बलखाती जाती
इक नदी की छोटी-सी तस्वीर दिखाती है ये खिड़की।
और हाँ, सूरज की चमकीली इन किरणों को भी
घर के अंदर ले आती है यहीं खिड़की।
बाहर झूमते हर सिंगार की मीठी खुशबू को भी हवा संग लाकर,
घर के कोने-कोने को महकाती है ये खिड़की।
जब मन थोड़ा-सा बोझिल हो तो
खुबसूरत से नज़ारे दिखला दिल को सुकून दे जाती है ये खिड़की।
जब आसमान से झरते मोती को हाथों में पकड़ना हो तो
उनको हमारी मुट्ठी में ले आती है ये खिड़की।
जब दिखाती है दूर से आते किसी प्रियतम की छवि
तो दौड़कर उससे मिलने को बेकरार कर जाती है ये खिड़की।
जो देखना चाहता है चुपके से अपने किसी प्रिय को,
उसके बेताब दिल को हौसला दे जाती है ये खिड़की।
खुद को छुपाते हुए औरो से, पगडंडियों पर क़दमों की हल-चल को देखना चाहे
अगर गाँव की नई दुल्हन, तो उसकी सच्ची साथी है ये खिड़की।
दुनिया के चल-चित्र को दिखाती हमे पल-पल हैरानी और खुशियाँ देती,
हमारी चहेती बाइस्कोप है ये खिड़की।
या यूँ कहो कि एक छोटे से गागर में सागर भरती है ये खिड़की।

अब्र में छुप गया है आधा चाँद, चाँदनी छन रही है शाखों से
जैसे खिड़की का एक पट खोले, झांकता हो कोई सलाखों से।

श्री प्रदीप कुमार शुक्ल, वै.एफ
आर.सी.एम.ए (लखनऊ)

"रामनामी"

मन नहाया नहीं राम के घाट पर
रामनामी न ओढ़ी गई उम्र भर।।

राम मुख ने कहा, काम मन ने कहा
कोई सीता दिखी, मन दशानन रहा।
वासनाएं न छोड़ी गई उम्र भर
रामनामी न ओढ़ी गई उम्र भर।।

गंग डुबकी लगी, तन की डुबकी रही
सर दर पर झुका, मन फल पर रुका।
कामनाएं न छोड़ी गई उम्र भर
रामनामी न ओढ़ी गई उम्र भर।।

राम प्रियतम मेरे, आत्मा कह रही
मन की दुनिया अड़ी, जाति मिलती नहीं
प्रीत प्रिय से न जोड़ी गई उम्र भर
रामनामी न ओढ़ी गई उम्र भर।।

आखिरी घाट पर, जब हो तन का सफ़र
सब निभा दें चलन, रामनामी कफ़न
आस इतनी ही जोड़ी गई उम्र भर
रामनामी न ओढ़ी गई उम्र भर।।

कमाल का ताना दिया आज मंदिर में भगवान ने
कहा- मांगने ही आते हो, कभी मिलने भी आया करो।

कृष्णा प्रसाद नायक, एम.टी.एस
आर.सी.एम.ए (कोरापुट)

जिंदगी

दिन गुजरता रहा कमाने में।
पर कहाँ चैन इस जमाने में॥
दे सका मैं नहीं खुशी सबको।
उम्र गुजरी अजी मनाने में॥
ढल रही जिंदगी दुआ रब की।
कश्मकश है गरीब खाने में॥
छीनते लोग हैं खुशी मेरी।
क्या मजा यार दिल दुखाने में॥
जिंदगी तो मिली अमानत है।
पल गुजारा इसे सजाने में॥
सत्य के राह मैं चलता रहा।
हम न उलझे सुनने सुनाने में॥
जो मिला है मुझे सबर कर ली।
मस्त हरदम रहा निभाने में॥
सीख जीवन मिली यही "निर्भय"।
मस्त सारा जमाना दिखाने में॥

एक और शाम हो गई, एक और दिन ढल गया
जिंदगी की किताब से, एक और पन्ना निकल गया।

रीतु, डाटा एंट्री ऑपरेटर
आर.सी.एम.ए (चंडीगढ़)

माँ

माँ के लिए मैं क्या लिखूं
माँ ने तो खुद मुझे लिखा है।
लोग कहते हैं कि आज माँ का दिन है,
वह कौन-सा दिन है जो माँ के बिना है।

मौत के लिए तो बहुत रास्ते हैं,
पर जन्म के लिए केवल माँ ही है।
मंजिल दूर है पर माँ साथ है,
छोटी-सी जिंदगी माँ के हाथ है।

मार डालती ये दुनिया कब की हमें,
लेकिन माँ की दुआओं में असर बहुत है।
दवा न असर करे तो नजर उतारती है,
एक माँ ही है जो कभी हार नहीं मानती है।

वो बीते दिनों का लम्हा मैंने याद किया था,
गोद में उठाकर जब माँ ने मुझे प्यार किया था।
माँ चाहे अनपढ़ हो या पढ़ी-लिखी हो
फिर भी लाड-प्यार करती है वो।

माँ को देख मुस्कुरा लिया करो
किस्मत वाला होता है जिसके पास माँ होती।
एक अच्छी माँ हर किसी के पास होती है,
पर एक अच्छी औलाद माँ के पास नहीं होती।

माँ सबकी जगह ले सकती है,
लेकिन माँ की जगह कोई नहीं ले सकता है।
शायद इसलिए कहते हैं कि कभी माँ का दिल
नहीं दुखाना चाहिए।
जिसके पास माँ है उसके पास दुनिया की जन्नत है।

माँ जैसा प्यार कोई नहीं कर पाता है,
माँ कभी गुस्सा तो कभी प्यार दिखाती है।
चोट बच्चों को लगे, पर दर्द माँ को होता है।
खुशनसीब है हम जिनके पास माँ होती है।

हे ईश्वर! मेरी माँ को हमेशा खुश रखना,
उन्हें कभी कोई तकलीफ न होने देना।
मेरी माँ हमेशा तंदुरुस्त और खुश रहे,
बस मेरी यही ख्वाहिश है मेरे ईश्वर से।

भले ही मोहब्बत का जिक्र करता है ये जमाना सारा
पर प्यार की शुरूआत आज भी माँ से होती है।

सोना कमलेश परिदा, कनिष्ठ विशेषज्ञ - I
आर.सी.एम.ए (कोरापुट)

हे मातृभूमि !

हे मातृभूमि! तेरे चरणों में सिर नवाऊँ
मैं भक्ति भेंट अपनी, तेरी शरण में लाऊँ।

माथे पे तू हो चंदन, छाती पे तू हो माला
जिह्वा पे गीत तू हो, तेरा ही नाम गाऊँ।

जिससे सपूत उपजें, श्रीराम-कृष्ण जैसे
उस धूल को मैं तेरी निज शीश पे चढ़ाऊँ।

माई समुद्र जिसकी पदरज को नित्य धोकर
करता प्रणाम तुझको, मैं वे चरण दबाऊँ।

सेवा में तेरी माता! मैं भेदभाव तजकर
वह पुण्य नाम तेरा, प्रतिदिन सुनूँ सुनाऊँ।

तेरे ही काम आऊँ, तेरा ही मंत्र गाऊँ
मन और देह तुझ पर बलिदान मैं चढ़ाऊँ।

भूमि से श्रेष्ठ माता है, स्वर्ग से ऊंचे पिता है,
माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है।

तपन उपाध्याय, एम.टी.एस
सेमिलाक, बेंगलूरु

दुनिया में रोशन नाम करो

ये खून खराबा न करके, मानवता के कुछ काम करो
नफरत फैला कर दुनिया में, मजहब को न बदनाम करो।
मजहब चाहे जितने भी हो पर सबका एक विधाता है
कहीं राम कहीं ईश्वर अल्लाह कहीं वो ईशां कहलाता है
वो है जिसका सृजनहार, उसी जग का ना काम तमाम करो।
मानव की रक्षा खातिर, मजहब सारे ईजाद किये
बँटते-बँटते इंसानों ने, ईश्वर अल्लाह भी बाँट दिये,
अब बाँटों न मानवता को, उल्टे सीधे न काम करो।
लानत है ऐसे लोगों पर, जो इसको धर्म बताते हैं
मजहब की झूठी बातें कर, सड़कों पर खून बहाते हैं
बन ढाल तपन मानवता की, दुनिया में रोशन नाम करो।

[यह कविता मणिपुर हिंसा/नूह(हरियाणा) की धर्म प्रायोजित हिंसा, साम्प्रदायिक हिंसा को देखते हुए लिखा गया है।]

कहते हैं कि हो जाता है संगत का असर,
पर कांटों को आज तक नहीं आया महकने का सलीका।

अमित सिंह, व.त.स बी
सेमिलाक, बेंगलूरु

हे प्रभु !

हे प्रभु, हे जगाधिदाता, सद्बुद्धि हमको दीजिए
झूठ, अन्याय, पाप, अधर्म से दूर हमको कीजिए।

पशु-पक्षी, पेड़-पल्लव से रहे हम हरे भरे
गाय भैंस सब पाल सके, धनवान इतना कीजिए।

संस्कृति भूले न कभी, भू पर हमारे पांव हो
तकनीकी में भी हो अग्रसर, ज्ञान इतना दीजिए।

मनुष्यों में प्रेम की आशा चमकती हो सदा
सार्थकता की हो महत्ता, व्यवहार ऐसा कीजिए।

राष्ट्रप्रेम की भावना चारों तरफ बहती रहे
देश हो प्रगति पथ पर, उपकार ऐसा कीजिए।

सघनता में विरलता का परस्पर ऐसा मेल हो
एक समान सब दिख सकें, चक्षु ऐसा दीजिए।

हे प्रभु, हे जगाधिदाता, सद्बुद्धि हमको दीजिए।

हम भी कमाल करते हैं,
उम्मीद इंसान से लगाकर
शिकवें भगवान से करते हैं।

आसिफ के, वा.चा.ए
सेमिलाक, बेंगलूरु

परिवार के विभिन्न अर्थ

कुछ लोगों के लिए, परिवार का मतलब
माँ, पिताजी और बच्चे हैं।

दूसरों के लिए, परिवार का मतलब घर
बनाने के लिए दो लोगों का काम करने
वाले एकल माता-पिता हैं।

कुछ लोगों के लिए, परिवार का मतलब
दादा-दादी के साथ रहना भी है।

दूसरों के लिए, परिवार चाची या चाचा है
जो माता-पिता की पूर्ति के लिए आगे आए है।

कुछ लोगों के लिए, परिवार का अर्थ है
दो माताएँ या दो पिता मिलकर एक
परिवार का विकास करना।

दूसरों के लिए, परिवार का अर्थ है गोद
लेने के माध्यम से लोग अपने प्यार को बढ़ाना।

कुछ लोगों के लिए, परिवार रक्त संबंधों
तक ही सीमित है।

दूसरों के लिए, परिवार में वे दोस्त शामिल होते हैं
जो हर सुख-सुविधा में साथ रहते हैं।

कुछ लोगों के लिए, परिवार ही उनके
जीवन के सभी लोग है।

दूसरों के लिए पालतू जानवर भी
परिवार के सदस्य माने जाते हैं।

हां, अलग-अलग लोगों के लिए परिवार
का मतलब अलग-अलग होता है,
लेकिन हर परिवार में एक चीज समान
होती है और वह है प्यार।

कुलदीप, तकनीशियन
सेमिलाक, बेंगलूरु

समय और रिश्तें

बड़े होकर भाई-बहन,कितने दूर हो जाते हैं।
इतने व्यस्त है सभी कि मिलने से भी मजबूर हो जाते हैं।

एक दिन भी जिनके बिना नहीं रह सकते थे हम,
सब ज़िंदगी में अपनी मसरूफ हो जाते हैं।

छोटी-छोटी बात बताए बिना हम रह नहीं पाते थे,
अब बड़ी-बड़ी मुश्किलों से हम अकेले जूझते जाते हैं।

ऐसा भी नहीं कि उनकी अहमियत नहीं है कोई,
पर अपनी तकलीफें जाने क्यूँ उनसे छिपा जाते हैं।

रिश्तें नये ज़िंदगी से जुड़ते चले जाते हैं,
और बचपन के ये रिश्तें कहीं दूर हो जाते हैं।

खेल-खेल में रूठना-मनाना रोज़-रोज़ की बात थी,
अब छोटी-सी भी गलतफहमी से दिलों को दूर कर जाते हैं।

सब अपनी उलझनों में उलझ कर रह जाते हैं,
कैसे बताए उन्हें हम वे हमें कितना याद आते हैं।

वे जिन्हें एक पल भी हम भूल नहीं पाते हैं,
बड़े होकर वो भाई-बहन हमसे दूर हो जाते हैं।

परिवार सिर्फ जीवन साथी-बच्चें ही नहीं, भाई-बहन भी हैं,
जो इनसे पहले से आपके साथ थे, हैं और रहेंगे।

बदल जाते हैं कुछ लोग हालात के साथ,
पीछे छूट जाते हैं कुछ रिश्तें वक्त के साथ।

आबिद अहमद, व.त.स बी
सेमिलाक, , बेंगलूरु

जिंदगी के नाम

जिंदगी सुबह देती है, जिंदगी शाम देती है
गमों का पैगाम देती है, जो इसमें डूबे बिना
पार हो जाये उसे ये बुलंद मुकाम देती है।
जिन्हें हम भूलने की दुआ करते हैं
ये हर बार उन्हीं का पैगाम देती है।

ख्वाहिशों के सफर में खरीदना बहुत
कुछ चाहते हैं पर जब जेब में हाथ जाता है
जिंदगी के सिक्के कम पड़ जाते हैं।

ये जिंदगी का सफर है यहाँ मिलता बहुत कुछ है
पर बहुत कुछ गँवाने के बाद। कुछ गँवाते है पैसा
कुछ समय और कुछ अपनों का साथ।

कुछ गुजर गया कुछ बाकी है जिंदगी का सफर
कुछ तेरे साथ गुजर जाए ये ख्वाहिश अभी
बाकी है। मैं बदनाम हूँ अपनी गलियों में तुम्हारी
वजह से। ऐ फुरसत के पलों अभी नहीं आना, अभी
थोड़ा काम बाकी है।

तस्वीरें लेना भी जरूरी है जिंदगी में
आईने गुजरा हुआ वक्त नहीं बताया करते।

मल्ला वीरा प्रसाद, त.अ.ए
आर.सी.एम.ए (एफ एंड एफ)

बेटी

जब-जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।

तारों की शीतल छाया है बेटी,
आँगन की चिड़िया है बेटी।

जिस घर जाये, उजाला लाती है बेटी,
बार-बार याद आती है बेटी।

ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।

त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नये-नये रिश्तें बनाती है बेटी।

बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।

दर्शन में भी दर्जा रखती प्लेटो से वो कम नहीं,
बेटियां हमारे दौर की बेटों से अब कम नहीं।

रिनीथ रिचर्ड, व.त.स बी
सेमिलाक, बेंगलूरु

<u>खुश रहिए</u>

कभी वर्तमान के पलों का मजा तो लीजिए
कभी जिंदगी के दुःखों को दफ़ा तो कीजिए।

कभी तो लीजिए मजा सफ़र-ए-जिंदगी का
मंजिल तक पहुँचने की फ़िकर तो छोड़िए।

छोड़िए इस जमाने की अन-बन को
आप लोगों से मिलनसार होना तो सीखिए।

अगर ये जिंदगी लग रही है हैरान, परेशान-सी
तो उसी जिंदगी में छुपी छोटी-छोटी खुशियों को जीना शुरू कीजिए।

कीजिए ये वादा खुद से खुद को खुश रखने का
जमाने की होड़ में खुद को नजर-अंदाज ना कीजिए।

खुशी मेरी तलाश में यूं ही भटकती रही,
कभी उसे हमारा घर न मिला
कभी उसे हम घर पर न मिले।

मल्ला वीरा प्रसाद, त.अ.ए
आर.सी.एम.ए (एफ एंड एफ)

कभी...इश्क तो हुआ होगा

कभी...इश्क तो हुआ होगा
मिट्टी की सौंधी खुशबू से
किसी अधूरी गुफ़्तगू से
टिमटिमाते किसी सितारें से
या उड़ते किसी गुब्बारें से
फुलझड़ी की उस चिंगारी से
या दोस्त की दिलदारी से
कुल्हड़ वाली चाय की महक से
तड़के आती चिड़ियाँ की चहक से

कभी...इश्क तो हुआ होगा
समुंद्र की ऊँची लहरों से
या तट पर उकेरी लकीरों से
गगनचुंबी किसी इमारत से
शायर की किसी इबारत से
किसी बुजुर्ग की खुदगर्जी से
किसी की अल्हड़ मनमर्जी से
अपने पसंदीदा रंग की छाई से
कभी यूँ ही अपनी तन्हाई से

कभी...इश्क तो हुआ होगा।

बेशुमार मोहब्बत होगी उस बारिश की बूंद को इस जमीन से,
यूं ही नहीं कोई मोहब्बत में इतना गिर जाता है।

नीरज कर्दम, व.त.स बी
सेमिलाक, बेंगलूरु

शादी

शादी सपना होता है एक लड़की का...
पर उसके लिए यह एक बुरा सपना बन गया...
पति means protection like her father & brother यह सोच थी उसकी
पर उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा Devil उसका पति ही बन गया।

सास में अपनी माँ मिलेंगी, यह यकीन था उसको
पर उसका यह भ्रम first day ही टूट गया।

पापा जैसे ही ससुर मिलेंगे, यही चाहा था उसने
पर उसके लिए उन्हें पापा बोलना भी एक कड़वा शब्द बस बन गया।

अपना घर कहेगी अपने ससुराल को, यह समझाती थी वह खुदको
पर वहाँ भी उसको पराया ही कहा गया।

उसके सपनों को भी वहाँ समझा जाएगा, यह उम्मीद थी उसको
पर वह एक बहु है, उसे बस यही जताया गया।

उसकी एक हँसी से पूरा घर मुस्कुराता था कभी
पर आज वहाँ उसका मुस्कुराना उसके गम छुपाने का बस एक
जरिया बन गया।

अपना 100% देना यही शिक्षा के साथ विदा हुई थी वह
पर हमेशा बस उसको ही अपना 100% देना होगा, उसे बस यही दिखाया गया।

शादी सपना होता है एक लड़की का
पर उसके लिए ये एक बुरा सपना बन गया...

संजय कुमार संजय, वै.ई
आर.सी.एम.ए (वायुयान)

जान लगा देना, पर जान गँवाना नहीं

एक लक्ष्य है, दो साल, तीन विषय, हजारों सवाल
एक लक्ष्य है, दो साल, तीन विषय, हजारों सवाल
हर रोज सुनोगे, जान लगा दो, पढ़ाई के अलावा,
सब कुछ भुला दो
सब कुछ भुला दो।

मेरे प्यारे बच्चों, "जान लगा देना, पर जान गँवाना नहीं"।
बेशक डूबकर मन लगाकर पढ़ो
दीवारों पर Formule फेकों
दीवारों पर Formule फेकों
सपनों में Aienstine (आईंस्टाईन) को देखों
फोकस पर पड़े लेंस हो जाओ,
मानचित्र पर जगह ढूंढते-ढूंढते
अपनी अलग जगह बनाओं
लेकिन जोश में आकर, इस घेरे से ही बाहर नहीं चले जाना है
भावना और संभावनाओं के बीच संतुलन बिठाना है
क्योंकि स्थिर रहने का मूल मंत्र यही से सिखोगे
दुनिया तो केवल शिखर की बात करेगी
संघर्ष सिर्फ तुम देखोगे और करोगे।

अच्छा डॉक्टर, इंजिनियर, IITIan या IAS जो भी बनोगे
हँसते-मुस्कुराते ही तो अच्छे लगोगे
और अभी जाने किस-किस तरह के ख्यालों में गुम हो
अभी जाने किस-किस तरह के ख्यालों में गुम हो
पर बात सुनो, माँ-बाप के सिर्फ आस ही नहीं,
आसमान और अरमान भी तुम हो
सब कुछ, अकेले झेल पाओ, अभी इतने बड़े नहीं हुए हो,
लेकिन जी तोड़ मेहनत न कर सको,
इतने छोटे भी नहीं हो।

और एक जरुरी बात,
ये जो तुम बार-बार कहते-रहते हो न,
अभी मैं बच्चा नहीं रहा
बिल्कुल यही साबित करके दिखाना है,
कायर नहीं, तुम्हे मजबूत और जिम्मेदार बनकर
दुनिया के सामने आना है।

सुनो जरा सर उठाकर देखो,
सुनो जरा सर उठाकर देखो,
ये धरती और आकाश, तुम्हारे ही मदद के लिए अड़े हैं
अवसर जाने किस-किस तरह के सिर्फ
एक तुम्हारे ही इंतजार में खड़े हैं
और ये न मिला, तो वो पा लोगे
वो न मिला तो कुछ और पाओगे।

बस तुम एक अपने आप को संभाले रखना
यकीन मानो तुम पत्थरों में से भी अपना राह बना लोगे।
इसलिए मेहनत....जान लगाना, पर जान गँवाना नहीं।

उठो, जागो और तब तक मत रूको
जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।

देव कुमारी, त.अ.सी
आर.सी.एम.ए (चंडीगढ़)

फिर भी तुम हँसना खिल-खिलाकर, बेखौफ होकर

परिवार को आगे करते-करते खुद को पीछे न हटा लेना,
रिश्तों के गुणा-भाग में, खुद के वज़ूद को न घटा देना।
त्याग की मूरत बन कर पूजा जाने से इंकार करना,
फिर भी तुम हँसना खिल-खिलाकर बेखौफ चलना॥

सबकी सुनती हो और भूल जाती हो अपने मन की कहना,
सोचो, क्यों तुम सामाजिक खुशहाली की नींव हो बहना।
खुल कर हँसना तुम्हारा, लोगों को रास नहीं आयेगा,
तुम्हारा स्वतंत्र रहना ही तुम्हें संपूर्ण नारी बनाएगा॥

आदर्श होंगे खोखले, रिवाज़ों में जकड़ा जाएगा,
आवाज़ ऊँची होना, इज़्ज़त का सवाल बन जाएगा।
अपने फैसले स्वयं लेना, चाहे जितनी मिले ठोकर,
फिर भी तुम हँसना खिल-खिलाकर बेखौफ होकर॥

कभी तुम्हारे पहनावे पर सवाल उठाए जाएंगे,
तो कभी तुम्हारे चरित्र को अदालत में घसीट लाएंगे।
खुद के लिये बोलना, टोकना, पड़े ज़रूरत तो चीखना,
लेकिन खामोशी, जो मृत्यु समान है, उसे कभी मत सीखना॥
सुंदर हो या कुरूप, तुम फैशन मॉडल के अनुरूप हो या नहीं,
तुम विपरीत चलोगी रीत से तो यहां झूठे किस्से सुनाएंगे कईं।
अपने भी वज़ूद के लिए लड़ना, क्या मिला है रोकर,
फिर भी तुम हँसना, खिल-खिला कर बेखौफ होकर॥

तुम्हारे माथे का तेज वो छुपाएंगे, हर औरत पर लगे परदे की तरह।
हाँ, तुम्हें मिट्टी में रौंदा जाएगा, पर आंखों में उड़ पड़ना है तुम्हें गर्दे की तरह।
तुम्हें निरंतर आगे बढ़ना होगा कठिनाइयों को मार कर ठोकर,
फिर भी तुम हँसना, खिल-खिला कर, बेखौफ होकर॥

मधुराज कुमार, प्र.स.बी
सेमिलाक, बेंगलूरु

<u>"हिंदी की अनोखी दुनिया"</u>

हिंदी की अनोखी दुनिया, रंगीन ख्वाबों की दहलीज,
शब्दों का जादू, विचारों की लड़ाई, भावनाओं का संगीत।
कविताओं की दुकान, कहानियों की मिठास, हिंदी की बोली,
भाषा का सोना, सुनहरी धारा।
वीरता की कहानी, शौर्य का प्रतीक, हिंदी की छाया,
उसके लफ़्ज़ों में छुपा जीवन का आदान-प्रदान।
संघर्षों की चुनौतियां, सपनों की मसाल,
हिंदी की अनगिनत बोलियां, जो सर्वदा बदलती है विचारों की माला।
गीतों की बाजार, ज़ज़्बातों की धारा, हिंदी की माधुर्य,
जिंदगी की एक रोशनी, एक उम्मीद की चिंगारी ख़ारी।
शब्दों का सम्राट, कवियों की रचना, हिंदी की भाषा,
विचारों की धारा, जगमगाती यहां-वहां।
हिंदी की अनोखी दुनिया, संस्कृति की राह,
बसे रहे उसके रंगों में, खोए रहे उसके शब्दों में, हर दिन नए आदान-प्रदान में।
यह है "हिंदी की अनोखी दुनिया", भाषा की महत्वपूर्ण भूमि,
जो सबको जोड़ती है, विचारों की खेती, भावनाओं की आबादी।

भारत में हर भाषा का सम्मान है,
पर हिंदी ईश्वर का वरदान है।

के शन्मुगप्रिया, वै.एफ
आर.सी.एम.ए (एफ एंड एफ)

<u>हिंदी की विशेषता</u>

हिंदी, भारतीय भूमि की प्रेमभाषा,
एक ऐसी मिठास, एक ऐसी आवाज।
बोलो या लिखो, यह बोलती है दिल की बात,
सुनो या पढ़ो, यह सुनाती है खुशियों की बात।
सभी भाषाओं की मातृभाषा, गर्व है हमें इस पर,
संस्कृति की बेला, हिंदी की है पहचान यहां।
भावनाओं को प्रकट करें, शब्दों की यह जादू,
हर रिश्तें को बांधे, बातें करे सबकी अलग-अलग मिलादू।
प्रेम, शांति, भाईचारा, हिंदी में बोलते ये,
एकता की बुनाई करती रहती यह सबके दिल में सदैव फूलों की मोती।
विश्व में मशहूर, यह सुंदर भाषा है,
अपनी बातों में छिपी बड़ी शक्ति है यह अनगिनत ताकत।
अपनी संगीतमयी ध्वनि, हर दिल में बसी यह राग,
हिंदी की खासियत, यही है हमारे दिल की बात।
हिंदी के शब्द, गीतों में बजते स्वर,
विशेषता की यह कहानी, हमें करते गर्वान्वित सदा बार-बार।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

अरुण कुमार, वै.एफ
आर.सी.एम ए (लखनऊ)

'समोसा की महिमा'

समोसा एक ऐसा व्यंजन है
जो करता सबका मनोरंजन है।
यह नाश्ते की शान है
व्यंजनों में इसका अद्वितीय स्थान है।

गली चौराहे चौर चौबारे सब जगह मिलता है
सुबह और शाम दुकानवाला दोनों टाइम तलता है।

आकार में अटपटा स्वाद में चटपटा
जिसने खाया वही मरमिटा ।
वजन में भारी शक्ल प्यारी-प्यारी
बड़े चाव से खाते हैं नर और नारी।

चाहे खाओ अकेले या खाओ संग पत्नी के
स्वाद बढ़ाना है तो खाओ संग चटनी के।
चटनी भी भांति-भांति की आती है
किसी को धनिया की तो किसी को इमली की भांति है।
लाल चटनी के साथ खाने से कृपा आती है
और हरी के साथ खाने से बुरी बला चली जाती है।

समोसे के वजन से प्लेट पर वजन बढ़ता है
और समोसे के सेवन से पेट का आकार बढ़ता है।
फिर पेंट कितना भी ऊपर पहनो हमेशा नीचे खिसकता है
और तो और ज्यादा खाने वालों का B.P भी ऊपर चढ़ता है।

इसलिए समोसे रुपी अविष्कार को हमारा नमस्कार,
हमारा नमस्कार।।

खेल दिवस, एकता के लिए दौड़ एवं पुरस्कार वितरण की झलकियां

<u>हिंदी विभाग द्वारा वर्ष 2023-24 के अंतर्गत की गई कार्रवाइयाँ</u>

वर्ष 2023-2024 के अंतर्गत इस कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 04 बैठकें, 01 हिंदी पखवाड़ा, 04 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इस वर्ष के सभी कार्यक्रमों का विस्तार से विवरण नीचे दर्शाया गया है।

- इस वर्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 04 बैठकों का आयोजन किया गया। इसमें हिंदी को बढ़ावा देने हेतु उठाए गए कदमों पर विचार किया जाता है। ये बैठकें मुख्य कार्यपालक (उड़नयोग्यता) की अध्यक्षता में आयोजित की जाती हैं।

- हिंदी में प्राप्त सारे पत्रों का जवाब हिंदी में ही दिया जाता है।

- 30 अगस्त 2023 से 14 सितंबर 2023 तक सेमिलाक तथा बेंगलूरु स्थित सभी आर.सी.एम.ए कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े के अंतर्गत हिंदी और हिंदीतर भाषियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे टंकण, स्मृति परीक्षण के साथ हिंदी लेख, हिंदी कविता और हिंदी कहानी एवं प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया। 25 सितंबर 2023 को अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं 27 सितंबर 2023 को पखवाड़ा समापन समारोह मनाया गया।

- इस कार्यालय में 2023-24 में चार हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। 22 जून 2023 को प्रशासन, लेखा एवं भंडार के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए, 18 अगस्त 2023 को तकनीकी अधिकारियों के लिए, 23 नवंबर 2023 को वैज्ञानिक एफ एवं उच्चतर के लिए तथा 27 फरवरी 2024 को वैज्ञानिक बी, सी, डी एवं ई अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- अखिल भारतीय राजभाषा वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन 10-11 जनवरी 2024 को सीवीआरडीई, चेन्नई में किया गया। इसमें सेमिलाक से दो लेखकों ने लेख प्रस्तुत किया। केयर एवं कासडिक, बेंगलुरू में भी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें सेमिलाक से क्रमशः 2 एवं 8 लेखकों ने अपना लेख प्रस्तुत किया

- 06-10 दिसंबर 2023 के दौरान आर.सी.एम.ए लखनऊ, कोरवा एवं कानपुर का निरीक्षण किया गया। तत्पश्चात 19-23 मार्च 2024 के दौरान आर.सी.एम.ए हैदराबाद, पदार्थ एवं प्रक्षेपास्त्र का निरीक्षण किया गया। इन कार्यालयों द्वारा हिंदी में किए गए कार्य को सराहा गया एवं राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास हेतु आवश्यक सुझाव दिए गए।

- प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत हर वर्ष कार्यालय में हिंदी में अधिक से अधिक काम करने वाले अधिकारी तथा कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

****

सेमिलाक खेल दिवस – 2023

CEMILAC

सेना उड़नयोग्यता और प्रमाणीकरण केन्द्र
रक्षा मंत्रालय, मारत्तहल्ली कॉलोनी पोस्ट
बेंगलूरु - 560 037